सुविचार

रिश्तों की सिलाई अगर भावनाओं से हुई है तो टूटना मुश्किल है और अगर स्वार्थ से हुई है, तो टिकना मुश्किल है।

साप्ताहिक

युवा प्रदेश

Freedom of Speech

RNI.NO. MPHIN/2015/76299

संपादक:- नागेश नरवरिया

पेज -7

वर्ष 6, अंक-71 | भोपाल, शुक्रवार 15 अक्टूबर 2021 | पृष्ठ -8 | मूल्य 3 रुपये

चमड़े के सिक्के चलाने वाले चमरदल महल के राजा की ऐतिहासिक धरोहर हो रही जर्जर

इटारसी। सतपुड़ा के जंगलों के बीच तवा बांध की तलहटी किनारे मौजूद राजा चमरदल का ऐतिहासिक किला पुरातत्व विभाग एवं सरकार की उपेक्षा का शिकार है। प्राचीनकाल के गौरवशाली इतिहास एवं चमरदल वंश की यादों को समेटे खड़े इस किले को पर्यटन के नक्शे पर जीवंत कर इसे अच्छा हैरीटेज बनाया जा सकता है, लेकिन प्रशासनिक उपेक्षा के चलते यह किला नक्शे से ही गायब है। इस मामले में अहिरवार समाज के कार्यकर्ता अब आगे आए हैं और इस धरोहर को बचाने के लिए मुहिम शुरू करने जा रहे हैं।

क्या है प्राचीन इतिहास

इतिहास के जानकार बताते हैं कि तवा नदी पर जहां तवा बांध मौजूद है। उसके पास मेन केनाल नहर के दाईं ओर करीब 20 एकड़ जमीन पर चमरदल राजा का किला मौजूद है, जो पुरातत्व विभाग की अनदेखी के चलते खंडहर में तब्दील हो चुका है। महल के समीप पानी के कुंड एवं बाबड़ी बनी हुई है जो लगभग 50 फीट गहरी थी और रखरखाव न होने से अब विलुप्त हो रही है। प्राचीन बावड़ी के समीप अंदर स्नान कुंड था जहां रानियां स्नान किया करती थीं। इसी कुंड से एक गुप्त रास्ता था जो तवा नदी के उस पार जाता था। नदी के दूसरे पार भी महल व चमाराज्य के अन्य भवन बने हुए हैं अब जिनके अवशेष बचे हैं। चमार राजा ने इस क्षेत्र में लंबे समय तक राज किया था। 400 से 500 वर्ष पहले राजा ने अपने राज्य में चमड़े के नोट व सिक्के चलाए थे, जो राज्य क्षेत्र था उसे चौबीस कहते थे,

जिनके अंतर्गत सनखेड़ा सोमलवाड़ा, घांटली गुर्रा सिलारी से सोनतलाई, बिछुआ, मरोड़ा के बीच लगभग 24 गांव रियासत में शामिल थे, इसलिए इसे चौबीसा कहते थे। इन्ही गांव मे मथरे राजा जी के चबूतरे बने इनकी पूजा होती है व उनके वंशज भी रहते है ।

पारसमणी का जिक्र भी किदवंतियों से पता चलता है कि रानी के पास पारसमणि पत्थर था। यदि वह पत्थर लोहे को छू ले तो पारस बन जाता था तो राजा उस समय लगान के रूप में किसानों से उनके हसिए दातरा लिया करते थे और उसे पारसमणि पत्थर से छूकर पारस बनाते थे। पारसमणि की जानकारी उस समय के लुटेरों को लगी तो उन्होंने राज्य पर हमला कर राजा की हत्या कर दी। रानी ने अपनी जान बचाने के लिए पारसमणि पत्थर लेकर नदी में छलांग लगा दी, लेकिन रानी का कभी पता नहीं लगा सका। जिस जगह रानी नदी में कूदी थी उस जगह पानी बहुत गहरा था और आज भी बहुत गहरा है। बुर्जुग बताते है कि गहराई इतनी है जितनी एक खाट में रस्सी बुनते हैं। उसके बीस गुना पारसमणि ढूंढने के लिए नदी में लोहे की बढ़ी जंजीर हाथी के पैरों में बांधकर खिंचवाई गई पर लुटेरों को पारसमणि नसीबत नहीं हुई। रविदास वंश के युवा चाहते हैं कि उनके वंश के चर्चित राजा की इस अहम निशानी को सरकार सहेजने का प्रयास करे। इस जगह संत रविदास की प्रतिमा स्थापित कर किले का जीर्णोद्धार कर इसे हैरीटेज के रूप में विकसित किया जाए। यह जगह अभी वन भूमि में आती है और यहां शानदार पर्यटन स्थल भी विकसित किया जा सकता है। इतिहासकार इस स्थल पर रिसर्च भी कर सकते हैं। रविदास

वंश के इंजीनियर अजय अहिरवाल व अन्य साथीयो ने किले का निरीक्षण करने के बाद कहा कि हम जल्द ही इस मामले में पर्यटन मंत्री एवं सीएम शिवराज सिंह चौहान जी से चर्चा करेंगे।

तवा रिसोर्ट से जुड़ाव

खास बात यह है कि पर्यटन विभाग का बड़ा पिकनिक स्पॉट तवा रिसोर्ट इसी जगह पर पर्यटन विभाग विकसित कर चुका है। यहां हजारों सैलानी पहुचंते हैं। यदि इस किले को संवारा जाए तो हजारों सैलानी इस ऐतिहासिक धरोहर को देख पाएंगे।

■ इंजीनियर अजय अहिरवाल
प्रदेश अध्यक्ष अहिरवार समाज संघ (इटारसी)

बैंक से डिफॉल्टर व्यक्ति की कौन-कौन सी संपत्ति कुर्क या विक्री की जाती है जानिए/Code of Civil Procedure,1908..।

पिछले लेख में हमने आपको बताया था कि अगर कोई व्यक्ति बैंक या अन्य संस्था के अधिकतम पाँच हजार से ज्यादा पैसो के लिए भुगतान नहीं करता है, तब उसे तीन माह तक का कारावास हो सकता है। लेकिन सिविल न्यायालय ज्यादा रकम नहीं चुकाने वाले व्यक्ति की वसूली के लिए संपत्ति कुर्की या विक्री के आदेश भी जारी कर सकता है वो कौन-कौन सी व्यक्ति की संपत्ति होगी जिसे न्यायालय जब्ती या नीलामी के आदेश देगा जानिए।

सिविल प्रक्रिया संहिता,1908 की धारा 60 की परिभाषा(सरल शब्दों में) -

अगर व्यक्ति निर्णीत-ऋणी(डिफॉल्टर) के विरुद्ध सिविल न्यायालय द्वारा संपत्ति कुर्क या विक्री की डिक्री पारित हैं उनकी जिन संपत्तियों को कुर्क या नीलाम किया जा सकता है वो-

भूमि, मकान, धन, बैंक एफ,डी, चेक,विनिमय पत्र(हस्ताक्षर वचन पत्र), हुणडी(आपसी चेक),शासकीय जमानत, धन का बंधपत्र, अन्य जमानत, समस्त चल, अचल संपत्ति जो डिफॉल्टर व्यक्ति की है, व्यक्ति को मिलने वाला वेतन(शर्तो के अनुसार) आदि संपत्तियां जब्त या नीलाम की जा सकती है।

डिफॉल्टर व्यक्ति कि जो संपत्ति कुर्क या नीलाम नहीं कि जा सकती है वह हैं -

उसकी पत्नी या उसकी बच्चों के पहनने के आवश्यक वस्त्र, खाने के बर्तन, सोने के पलंग, बिस्तर के कपड़े, निजी आभूषण जो स्त्री की धार्मिक प्रथा के अनुसार अलग नहीं कर सकती है जैसे शादी के गहने, सगाई की अंगूठी, मंगलसूत्र आदि। शिल्पी के औजार, खेती के उपकरण, वह सामग्री जो व्यक्ति की जीविकोपार्जन के लिए आवश्यक है, पेशन वाले व्यक्ति की पेंशन या पी.एफ आदि, व्यक्ति के आवश्यक दस्तावेज आदि संपत्तियों को कोई भी सिविल न्यायालय जब्ती या नीलामी करने के आदेश नहीं दे सकता है।

- एक बार वेतन लेने के बाद दुवारा फिर से कुर्क नहीं किया जा सकता है जानिए -

- शेख नूरजहाँ बनाम एम. राजेश्वरी-?

उपर्युक्त मामले में आंध्रप्रदेश उच्च न्यायालय ने यह अभिनिर्धारित किया कि जहाँ निर्णीत (डिफॉल्टर)व्यक्ति का वेतन पहले ही 24 माह(दो वर्ष) से अधिक समय तक कुर्की के अधीन रह चुका हो वहाँ पुनः दूसरी बार उसके वेतन को जब्त नहीं किया जा सकता है।

- लेखक बी.आर.अहिरवार(पत्रकार एवं लॉ छात्र होशंगाबाद)
9827737665

प्रशासन ने जल्द से जल्द कार्य चालू नही कराया तो अधिक मात्रा में समस्त ग्रामीण वासी

बैरसिया तहसील का घेराव करके धरना प्रदर्शन करने को मजबूर रहेगा

बैरसिया। ग्राम बरेला खेड़ा पंचायत बैरागढ़ आ रही समस्त जन समस्या को लेकर शासन प्रशासन ने जल्द से जल्द कार्य चालू नही कराया तो अधिक मात्रा में समस्त ग्रामीण वासी बैरसिया तहसील का घेराव करके धरना प्रदर्शन करने को मजबूर रहेगा समस्त ग्रामीण वासियों की गुहार है विधायक विष्णु खत्री जी के कार्यकाल 7 वर्ष पूर्ण होने पर भी अभी तक कोई ध्यान नही दिया खत्री को जन समस्या को लेकर ग्रामीण वासियों ने कई बार अवगत कराया है समस्त सामाजिक संगठन चल रहे उनसे भी आग्रह है अपने स्तर से ग्राम बरेला खेड़ा की आवाज उठाए ग्रामीणवासियो के साथ में मिलकर सामाजिक कार्यकर्ता रामबाबू बरेला खेड़ा मोब नंबर 9770275318 पर संपर्क करें।

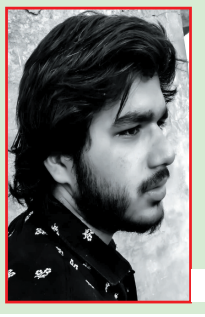

चांद की चादर थी ,
सूरज सी चिड़िया थी वहां ।
समंदर सा संगीत था ,
पेड़ सी हवाएं थी वहां ।
राख उड़ती है अब हम रहा करते थे जहां।

■ विकास सभरवाल, पानीपत

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने स्मार्ट उद्यान में करंज का पौधा लगाया

भोपाला। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आज श्यामला हिल्स स्थित स्मार्ट पार्क में पौधारोपण किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने आज आयुर्वेदिक चिकित्सा में महत्वपूर्ण माने गए करंज का पौधा लगाया। मुख्यमंत्री श्री चौहान प्रतिदिन पौधा लगाने के संकल्प के क्रम में निरंतर पौध रोपण कर रहे हैं।

भीम आर्मी जिलाध्यक्ष जीतेन्द्र मूलनिवासी का मनाया जन्मदिन

रायसेन /बाड़ी। 12 अक्टूबर को भीम आर्मी के रायसेन जिला अध्यक्ष जीतेंद्र मूलनिवासी ने अपने जन्मदिन पर माता सावित्रीबाई फुले निशुल्क कोचिंग क्लास के छात्र छात्राओं को कॉपी पेन वितरण किए और बच्चों को मार्गदर्शन दिया संत शिरोमणि गुरु रविदास मंदिर बाड़ी पर भीम आर्मी के सभी कार्यकर्ता एवं सामाजिक बंधु उपस्थित रहे भीम आर्मी के कार्यकर्ताओं ने भीम आर्मी जिलाध्यक्ष जीतेंद्र मूलनिवासी को जन्मदिवस की बधाई दी भीम आर्मी रायसेन जिला अध्यक्ष जीतेंद्र मूलनिवासी ने सभी साथियों का आभार व्यक्त किया और भीम आर्मी द्वारा संचालित माता सावित्रीबाई फूले निशुल्क कोचिंग क्लास के बच्चों को अपने लक्ष्य को

पूरा करने के लिए उन्हें संबोधित किया कोचिंग क्लास का संचालन विगत 2 वर्षों से भीम आर्मी ओर अजाक्स के द्वारा होता है जिसमें बच्चों को निशुल्क शिक्षा दी जाती है और समय-समय पर बच्चों को किताब कॉपी पेन वितरित किए जाते हैं।

संक्षिप्त समाचार

खदान में भरे पानी में डूबने से युवक की मौत

भोपाल। क्रेसर बस्ती खदान एन-सेक्टर अयोध्या नगर में शनिवार शाम छह बजे 35 वर्षीय प्रदीप अहिरवार की पानी में लाश मिली। पुलिस का कहना है कि वह जल योग क्रिया में काफी निपुण था। वह घंटों पानी के अंदर जल योग क्रिया करता रहता था। 20 दिन पहले भी उसके इसी तरह से डूबने की सूचना मिली थी। उस समय पुलिस पहुंची तो वह पानी के अंदर बैठा था। उसे निकालने पर उसने अपनी योग क्रिया के बारे में पुलिस को बताया था। हालांकि पुलिस को जांच के दौरान शनिवार को शराब पीकर पानी में उतरने की बात भी पता चली है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक प्रदीप अहिरवार क्रेशर बस्ती के पास अयोध्या नगर में रहता था और हम्माली करता था। गुरुवार को वह पत्नी को करोंद में छोटे भाई के घर छोड़कर यह कहकर आया था कि उसे रतलाम जाना है। शनिवार को शाम लोगों ने प्रदीप का शव उसके घर से करीब 60 मीटर दूर पानी की खदान में देखा। लोगों ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को बाहर निकलवाया और पीएम के लिए भिजवाया। शव करीब 30 से 35 घंटे पुराना था। अयोध्या थाना प्रभारी पवन सेन ने बताया कि प्रदीप अक्सर पानी में जल आसन लगाता था। वह घंटों पानी में बैठा रहता था। करीब 20 दिन पहले भी उसके पानी में डूबने की सूचना मिली थी। मौके पर पहुंचकर उसे बाहर निकाला तो उसने कहा था कि वह डूबा नहीं है। जल में बैठकर योग क्रिया कर रहा था। हालांकि उसे शराब पीने की लत थी। उसके घर से शराब की बोतल मिली है। आशंका है कि वह नशा करने के बाद पानी में उतरा होगा, जिससे डूबने से उसकी मौत हो गई। हालांकि पीएम रिपोर्ट के बाद ही मौत की वजह का सामने आएगी।

छात्र को डर दिखाकर 35 हजार ऐंठने वाला गिरोह गिरफ्तार

भोपाल। लोगों को तंत्र मंत्र का डर दिखाकर ठगी करने वाले छह सदस्यीय गिरोह का बागसेवनिया पुलिस ने रविवार को पर्दाफाश कर दिया। आरोपित एक छात्र को उसके परिवार पर संकट आने का डर दिखाकर करीब 35 हजार रुपये ऐंठकर फरार हो गए थे। पीड़ित ने बागसेवनिया थाने में एफआइआर दर्ज कराई थी। गिरफ्तारी के बाद आरोपितों ने गोविंदपुरा, बजरिया और रायसेन जिले में इसी प्रकार की वारदात करना कबूल की है। बता दें कि पांच अक्टूबर को ग्राम गुलेरी जिला आलीराजपुर निवासी अखिलेश रावत (25) बरकतउल्ला विवि से निकल कर बागसेवनिया बाजार तरफ जा रहा था। तभी अहमदपुर दरगाह से आगे उसे दो लोगों ने तंत्र मंत्र से उसके परिवार पर खतरा आने का डर दिखाकर करीब 35 हजार रुपये ऐंठ लिए। पुलिस ने आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए 90 स्थानों के सीसीटीवी फुटेज चेक किए और उनके ठिकानों तक पहुंच गई। टीआइ संजीव चौकसे के अनुसार आरोपितों की पहचान राहुल साहू (27), संतोष कटकोले (37), मोहित रैकवार (30), राजू विश्वकर्मा (30), सुमित रत्नाकर (28) और देवी सिह (30) के रूप में हुई। सभी आरोपित बाहर के रहने वाले हैं, भोपाल में किराए से रहते हैं। इनसे दो बाइक और रुपये जप्त किए गए हैं। आरोपितों को रिमांड पर लेकर पुलिस पूछताछ कर रही है।

अहिरवार समाज संघ की बैठक संपन्न हुई, नए पदाधिकारी नियुक्त किए गए

र. मांडले

पिपरिया-होशंगाबाद। अहिरवार समाज संघ मध्य प्रदेश (भारत) की बैठक संपन्न हुई एवं नव नियुक्ति जिला अध्यक्ष एडवोकेट गुमान सिंह मांडले सम्मान समारोह एवं पिपरिया कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया गया ।

जिसमें अहिरवार समाज से नगर अध्यक्ष धनीराम(राजू ठेकेदार) नियुक्त किए गए एवम ब्लॉक अध्यक्ष करोड़ी लाल गोलियां को नियुक्त किया गया। समस्त अहिरवार समाज के द्वारा जिसमें पदाधिकारी बीसी बरगले जी प्रांतीय संरक्षक सदस्य एवं अभय राम चौधरी जी सेवानिवृत्त SDOP, संजेश गोलियां आईटी सेल प्रदेश प्रभारी एवं नगर के गणमान्य नागरिक राधे श्याम टीकाराम अहिरवार,योगेश अहिरवार, देवेंद्र पचमढ़ी, बड्डू अहिरवार , गौरी शंकर ,नीलेश बामने ,ललित अहिरवार नर्मदा अहिरवार, रामस्वरूप मांडले, देवेंद्र अहिरवार , देवकिशन, बलिराम, दीपक, मोहनलाल बिट्टू ,जेपी मांडले (T.C.) मनोज, अरविंद धापाड़ा, दयाराम ठाकरे, छोटे लाल ठक्कर श्याम गुड्डू एवं अन्य सामाजिक लोग उपस्थित रहे।

राजस्थान ने मध्य प्रदेश को हराकर जीता जूनियर वर्ग का खिताब

भोपाल। राजधानी में खेली जा रही 21वीं राष्ट्रीय 10 स्क्वायर सीनियर एवं जूनियर क्रिकेट प्रतियोगिता में जूनियर वर्ग में राजस्थान ने मप्र को 62 रनों से हराकर खिताब जीता। सीनियर वर्ग में एलएनसीटी विवि टीम ने फाइनल में प्रवेश किया।

जेएनसीटी के मैदान पर जूनियर वर्ग का फाइनल खेला गया। राजस्थान ने फाइनल में मप्र को 62 रनों से पराजित किया। राजस्थान ने निर्धारित 16 ओवर में 160 रन बनाए। देबाशीष ने 47 और प्रियांश ने 22 रनों का योगदान दिया। मप्र की ओर से सुमुख ने तीन विकेट लिए। जवाब में मप्र की टीम 15.1 ओवर में 118 रनों पर ढेर हो गई। दीपांशु ने 50 रन बनाए। राजस्थान के देबाशीष ने दोहरा प्रदर्शन करते हुए दो विकेट लिए। सीनियर वर्ग के दूसरे सेमीफाइनल में एलएनसीटी ने

झारखंड को नौ विकेट से पराजित किया। झारखंड की टीम 14 ओवरों में 71 रनों पर ढेर हो गई। एलएनसीटी फैजल रजा और वरूण ने तीन तीन विकेट लिए। जवाब में एलएनसीटी ने 11 ओवरों में लक्ष्य हासिल कर लिया। एलएनसीटी के गौरव ने 40 रन बनाए। फाइनल मुकाबला सोमवार को एलएनसीटी विवि और पांडिचेरी के बीच खेला जाएगा।

भेल प्रबंधन कर्मचारियों की नहीं सुन रहा, रोजाना हो रहे प्रदर्शन

भोपाल। भेल कर्मचारियों ने प्रबंधन के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। लगातार प्रदर्शन हो रहे हैं, लेकिन भेल प्रबंधन तीनों प्रतिनिधि यूनियन राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस, भारतीय मजदूर संघ, ऑल इंडिया भेल एम्प्लोई यूनियनों की भेल प्रबंधन नहीं सुन रहा है। भेल के फाउंड्री गेट पांच, गेट नंबर - छह सहित कारखाने के सभी नौ गेटों पर एक-एक करके यूनियनों के नेतृत्व में प्रदर्शन कर रहे हैं। प्रदर्शन का आज पांचवां दिन है। दरअसल भेल कर्मचारियों की मांग है कि भेल कारखाने में साल 2011 में अनुकंपा नियुक्ति बंद कर दी थी, जिसे जल्द फिर से शुरू किया जाए। फैक्ट्री एक्ट 11948 के तहत कारखाने में कर्मचारियों के लिए कैंटीनों की सुविधा होनी चाहिए। भेल कारखाने की तीनों कैंटीन बंद पड़ी हैं, जिन्हें सब्सिडी का लाभ देकर खोला जाए। प्लांट परफोंस(पीपी), दीपावली बोनस दिया जाए।

बैरागढ़ रेलवे फाटक पर ओवरब्रिज बनाने के लिए डीएम व डीआरएम को देंगे ज्ञापन

संत हिरदाराम नगर। संत हिरदाराम नगर के रेलवे फाटक पर ओवर अथवा अंडर ब्रिज बनाने की मांग को लेकर ओवर ब्रिज एवं अंडर ब्रिज बनाओ संघर्ष समिति की कार्यवाहक अध्यक्ष नूपुर चौहान के नेतृत्व में महिलाओं का एक शिष्टमंडल जल्द ही भोपाल जिला कलेक्टर एवं रेलवे डीआरएम को ज्ञापन देगा। गौरतलब है कि 20 वर्षों तक संघर्ष करते रहे समाजसेवी दौलत सिंह चौहान भले ही अब इस दुनिया में नहीं रहे लेकिन उनकी बेटी नूपुर चौहान ने अब ठान लिया है कि वह अपने पिता के सपनों को साकार करने के लिए ओवर एवं अंडर ब्रिज के लिए अपने पिता के आंदोलन को आगे बढ़ाएगी। यहां पर अंडर अथवा ओवरब्रिज बनाने की मांग को लेकर दौलत सिंह चौहान ने वर्ष 1999 में रेलवे ब्रिज बनाओ संघर्ष समिति गठित की थी और अपने आंदोलन की शुरुआत में उन्होंने रेलवे के वरिष्ठ अधिकारियों से लेकर प्रदेश केंद्र सरकार को अनेक ज्ञापन भेजे तथा वर्ष 2003 में साध्वी उमा

भारती के नेतृत्व में बनी जनशक्ति पार्टी के बैनर तले धरना आंदोलन किया था और इसके बाद वह निरंतर इस संबंध में आंदोलन करते रहे एक बार रेल रोको आंदोलन के चलते पुलिस ने दौलत सिंह व उनके साथियों को गिरफ्तार भी किया था। अंडर ब्रिज एवं ओवरब्रिज शीघ्र बनाने की मांग को लेकर दौलत सिंह चौहान ने मध्यप्रदेश हाईकोर्ट में एक याचिका भी दायर की थी इसी दौरान वर्ष 2019 में उनका निधन हो गया।

बेटी ने कहा पिता के सपनों को पूरा करूंगी

दौलत सिंह चौहान की सबसे छोटी बेटी नूपुर चौहान जो वर्तमान में लॉ की छात्रा है उसने अपने पिता द्वारा बनाई गई संघर्ष समिति की कमान संभाल ली है उसका कहना है कि वह रेलवे ब्रिज बनाने के लिए आंदोलन को अब गति देकर पिता के सपनों को पूरा करने का प्रयास करूंगी। अंडर ब्रिज की मांग को लेकर रेल सुविधा संघर्ष समिति भी लंबे समय से संघर्ष करे रही है। समिति के अध्यक्ष परसराम आसनानी का कहना है कि जन हित में यह मांग जल्दी पूरी होनी चाहिए।

संक्षिप्त समाचार

■ *ग्लोबल वॉर्मिंग से पिघल रहे हिमालय के ग्लेशियर*

आकार लगातार 2 से 3 गुना बढ़ रहा, कई राज्यों पर मंडराया बाढ़ का संकट

हमीरपुर/शिमला। ग्लोबल वॉर्मिंग से हिमालय के ग्लेशियर पिघल रहे हैं। इससे झीलों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। हद्दृज्ञ हमीरपुर के प्रो. चंद्र प्रकाश सालों से अपने शोधार्थियों के साथ ग्लेशियर स्टडी कर रहे हैं। उन्होंने कई चौकाने वाले खुलासे किए हैं। पिछले 4 दशक में उच्च हिमालय और पीर पंजाल की रेंज में ग्लेशियर पिघलने से बनी झीलों की संख्या में दोगुना इजाफा हुआ है। साल 1971 में उच्च हिमालय और पीर पंजाल रेंज की चंद्रा, भागा, ब्यास, और पार्वती नदी घाटी में 1000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल से बड़ी कुल 77 ग्लेशियर झील थीं। साल 2011 में इनकी संख्या बढ़कर 155 हो गई है। पहले से मौजूद झीलों के आकार में 2

से 3 गुना बढ़ोतरी भी हुई है। कश्मीर, नेपाल, भूटान, तिब्बत और भारत के सिक्किम, उत्तराखंड, जम्मू कश्मीर और हिमाचल के क्षेत्रों में लगातार इन झीलों की संख्या बढ़ रही है। झीलों के आकार और संख्या के बढ़ने से इन क्षेत्रों में अत्यधिक बारिश, ग्लेशियर टूटने और भूस्खलन से झीलों के फटने का खतरा भी बढ़ गया है। डॉ. चंद्र प्रकाश का शोध उच्च हिमालय और पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला की 4 नदी घाटियों पर अधिक केंद्रित है। ग्लेशियर झीलों का यह अध्ययन इंडियन रिमोट सेंसिंग सैटलाइट डाटा और अमेरिका के साल 1971 में की गई कोरोना एरियल फोटोग्राफ की मदद से किया गया है। चंद्र और भागा बेसिन को व्यास और पार्वती बेसिन से अलग करने वाली पीर पंजाल रेंज भी इस अध्ययन का केंद्र बिंदु रहा है। हालांकि उच्च हिमालय रेंज में पीर पंजाल रेंज के बजाय ग्लेशियर झील का निर्माण पिछले 4 दशक में ज्यादा हुआ है।

चंद्रा बेसिन में पिछले 4 दशक में 3 गुना इजाफा

पिछले 4 दशक में चंद्रा बेसिन में 3 गुना इजाफा देखने को मिला। साल 1971 में कुल 14 झील इस बेसिन में मौजूद थीं, जो अब बढ़कर 48 हो गई हैं। इस बेसिन में उच्च हिमालय क्षेत्र की सबसे बड़ी दो ग्लेशियर झील मौजूद हैं। समुद्र टापू ग्लेशियर से बनी झील का आकार 1.35 वर्ग किलोमीटर है। इसके अलावा गेपांगघट ग्लेशियर झील का आकार भी पिछले 4 दशक में कई गुना बढ़ गया है। साल 1971 में इसका आकार 0.17 वर्ग किलोमीटर था, जो साल 2003 में 0.5 वर्ग किलोमीटर और साल 2011 में 0.84 वर्ग किलोमीटर हो गया। लगातार आकार के बढ़ने से जहां निकट भविष्य में इन झीलों के फटने से बाढ़ का खतरा बढ़ा है। वहां प्राकृतिक रूप से ही पानी की निकासी होने से खतरा कुछ हद तक टल भी गया है, लेकिन खतरे की संभावना को नकारा नहीं जा सकता।

विश्वभर में 2016 से पहले 1348 ग्लेशियर झील फटीं ,13 हजार की मौत

ग्लोबल वॉर्मिंग से पिघलते ग्लेशियर मानवता के लिए बड़ा खतरा है। विश्वभर में 2016 से पहले 1348 ग्लेशियर झीलों के फटने की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। इन घटनाओं में 13 हजार लोगों की मौत हुई। हिमालय क्षेत्र में कुल 45 घटनाएं इस तरह की हुईं, जिससे नेपाल, भूटान, तिब्बत और भारतीय क्षेत्र में खासा नुकसान देखने को मिला। वहीं अब लगातार बढ़ रही ग्लेशियर की झीलों से एक बड़ा खतरा हिमालय पर्वत श्रृंखला के देशों के लिए माना जा रहा है।

12 घंटों की पूछताछ के बाद पुलिस ने बताया कि आशीष मिश्रा ने कई सवालों से जवाब नहीं दिए

लखीमपुर केस:आशीष मिश्रा ने पेश किए 13 वीडियो, नहीं मिली 2:20 से 3:36 बजे के बीच की फुटेज

लखीमपुर। यूपी के लखीमपुर खीरी केस में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री अजय मिश्रा टेनी के बेटे आशीष मिश्रा को बीती रात गिरफ्तार कर लिया गया। 12 घंटों की पूछताछ के बाद पुलिस ने बताया कि आशीष मिश्रा ने कई सवालों से जवाब नहीं दिए। उसे सोमवार को कोर्ट में पेश किया जाएगा। जानकारी के मुताबिक, आशीष ने अपने बचाव में कुल 13 वीडियो पेश किए, लेकिन दिन में 2:20 से 3:36 बजे के बीच की फुटेज नहीं मिली। यही वह बिंदू रहा, जिसके कारण आशीष की गिरफ्तारी हुई। आशीष कहता रहा है कि वारदात के समय वह दंगल में था, लेकिन इसे साबित नहीं कर सका। आशीष से 12 घंटे में 150 से अधिक प्रश्न पूछे गए। इस बीच, घटना वाले दिन मारे गए भाजपा कार्यकर्ताओं की मौत पर किसान नेता राकेश टिकैत के बयान पर विवाद हो गया है। राकेश टिकैत ने शनिवार को कहा कि लखीमपुर खीरी हिंसा के दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं की लिंचिंग को मैं गलत नहीं मानता। वह एक्शन का रिएक्शन था, उसके पीछे कोई साजिश नहीं थी, इसलिए हम उसे गलत नहीं मानते हैं। राष्ट्रीय राजधानी में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए टिकैत ने कहा, लखीमपुर खीरी में कारों से रौंद कर चार किसानों की हत्या कर दी गई। इसकी प्रतिक्रिया के स्वरूप दो भाजपा कार्यकर्ताओं की हत्या की गई। यह एक प्रतिक्रिया थी। मैं हत्याओं में शामिल लोगों को अपराधी नहीं मानता। प्रेस वार्ता में मौजूद संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम) के नेता योगेंद्र यादव ने भी लखीमपुर खीरी हिंसा में न्याय की मांग की, जिसमें चार किसानों सहित आठ लोग मारे गए।

लखीमपुर जेल में आशीष मिश्रा

करीब 11 घंटे की पूछताछ के बाद आशीष को रात करीब 11 बजे गिरफ्तार कर लिया गया। उसे रात को ही जिला मजिस्ट्रेट कोर्ट में पेश किया गया जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। रात करीब 12.45 बजे उसे लखीमपुर जिला जेल में भेज दिया गया। किसानों की ओर से दर्ज कराई गई प्राथमिकी में आशीष मिश्रा के अलावा 15-20 अज्ञात लोगों को भी आरोपी बनाया गया है. उसके खिलाफ धारा 147, 148, 149 (दंगों से संबंधित), 304 (लापरवाही से मौत), 302 (हत्या) और 120 बी। (आपराधिक साजिश) के तहत मामला दर्ज किया गया है।

लागत भी नहीं निकली, अगली फसले की बोवनी संकट में

सिरोज। खेतों में जुताई का कार्य अब प्रारंभ हो चुका है, किसानों ने सोयाबीन की फसल और उड़द की फसल में कुछ अच्छा मुनाफा तो नहीं कमाया पर अब अगली फसल से ही उम्मीद है इसलिए बोवनी की तैयारी किसान करने लगे हैं। खरीफ के सीजन में सोयाबीन की बोवनी करने के बाद सोयाबीन की फसल अच्छी दिखाई दे रही थी और अच्छी बारिश से किसानों को अच्छी फसल की उम्मीद भी थी पर लगातार बारिश होने के कारण सोयाबीन और उड़द की फसल पूरी तरह खराब हो गई। किसानों को सोयाबीन की फसल में

घाटे का सौदा उठाना पड़ा। क्षेत्र के किसानों का कहना है कि महंगा बीज लेकर महंगा कीटनाशक डालने के बाद भी सोयाबीन की अच्छी उपज नहीं निकल पाई। क्षेत्र में अधिकतम सोयाबीन एक हेक्टेयर में सिर्फ एक से 2 क्विंटल ही निकल पा रहा है, जिसमें लागत निकलना भी बहुत मुश्किल है। ऐसे में कैसे अगली फसल की तैयारी करें। सेमल खेड़ी निवासी नसीम खान,बगरोदा निवासी राकेश रघुवंशी, किसान राहुल रघुवंशी ईकोदिया, धर्मेंद्र रघुवंशी बनिया ढाना, धारू रघुवंशी, परसोरा, रविंद्र रघुवंशी ने खेतों में लागत मूल्य भी नहीं निकाल पाने की बात कही। सरकार द्वारा लगातार खाद, बीज, यूरिया एवं डीजल पेट्रोल पर दाम बढ़ाए जाने के कारण महंगाई बढ़ती जा रही है। जिसके कारण किसानों को काफी नुकसान उठाना पड़ रहा है।

घर में लगाएं सोलर पैनल और हर माह बचाएं हजारों रुपए, ऐसे समझें पूरा गणित

नई दिल्ली। यदि आप भी अपने भारी भरकम मासिक बिजली बिल से काफी परेशान हो चुके हैं और इससे छुटकारा पाना चाहते हैं तो तत्काल सरकारी योजना का फायदा उठाकर अपने घर की छत पर सोलर पैनल लगवाकर खुद बिजली बना सकते हैं और यदि अतिरिक्त बिजली बनती है तो उसे बेचकर मुनाफा भी कमा सकते हैं। देश में राज्य सरकारों के साथ केंद्र सरकार भी सोलर पैनल लगाने पर भारी सब्सिडी ऑफर कर रही है और आप अपने घर की छत पर सोलर पैनल लगाकर खुद अपनी जरूरत की पूर्ति कर सकते हैं। आइए समझते हैं सोलर

पैनल लगाने पर कितनी सब्सिडी मिलती है, कितनी सोलर प्लेट लगानी पड़ती है और इसकी कीमत क्या है। एक सोलर पैनल से हमें कितनी बिजली मिल सकती है। इस पूरे कैलकुलेशन को आप यहां पूरी तरह समझ सकते हैं -

सोलर पैनल रूफटॉप की लागत

गौरतलब है कि केंद्र सरकार वर्ष 2022 तक देश में हरित ऊर्जा के उत्पादन को 175 गीगावाट तक ले जाना चाहती है। ऐसे में सरकार सोलर पैनल लगाने में काफी सब्सिडी दे रही है। साथ ही अगर आप सौर ऊर्जा से ज्यादा बिजली पैदा कर लेते हैं तो उसे सरकार को बेच भी सकते हैं। केंद्र सरकार का नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय रूफटॉप सोलर प्लांट पर 30 प्रतिशत सब्सिडी प्रदान करता है। अगर आप इसे अपने खर्च पर इंस्टॉल करवाते हैं तो इसमें करीब 1 लाख रुपये का खर्च आएगा।

शहर के 39 में से 30 वार्डों में फैला डेंगू

विदिशा। शहर में डेंगू तेजी से पैर पसारता जा रहा है। अभी तक 39 में से 30 वार्डों तक डेंगू पहुंच गया है। जहां पर 115 लोग इसकी चपेट में आए हैं। अक्टूबर माह के 10 दिन में ही शहर में सर्वाधिक 49 लोग पॉजिटिव आए हैं। स्वास्थ्य विभाग के पास इससे निपटने के लिए फिलहाल कोई कार्य योजना नहीं है। जहां पॉजिटिव मामले आते हैं वहां मलेरिया विभाग की टीम सर्वे करने पहुंच जाती है। रविवार को बड़ी बजरिया, बंटीनगर और अरिहंत विहार में तीन पॉजिटिव निकले हैं। बता दें कि इस साल अगस्त माह से ही शहर में डेंगू के मामले सामने आने लगे थे। सितंबर में इनकी संख्या में तेजी से वृद्धि हुई, लेकिन मलेरिया विभाग अमले की कमी के चलते कोई सार्थक योजना बनाकर काम नहीं कर सका।

केंद्रीय ऊर्जा मंत्री बोले- कोयले की किल्लत नहीं, बिजली संकट को बेवजह प्रचारित किया गया

नई दिल्ली। देश में कोयले की कमी के खबरों के बीच केंद्रीय ऊर्जा मंत्री आरके सिंह ने रविवार को कहा कि दिल्ली में बिजली की कोई कमी नहीं है। पूरी दिल्ली को बिजली दी जा रही है। वहीं अन्य राज्यों के बारे में उन्होंने बताया कि वे रोज मॉनिटर कर रहे हैं। अभी सभी प्रमुख संयंत्रों में चार दिन के कोयले का स्टॉक है। आरके सिंह ने यह भी कहा कि इस मामले को गलत तरीके से बड़ा संकट बताया जा रहा है और प्रचारित किया जा रहा है। विभिन्न बिजली कंपनियों के अधिकारियों से बैठक के बाद ऊर्जा मंत्री ने ये बातें कहीं। उन्होंने कहा, मैंने टाटा पावर के सीईओ को कार्रवाई की चेतावनी दी है। वे ग्राहकों को आधारहीन एसएमएस भेज रहे हैं जो दहशत पैदा कर सकते हैं। गेल और टाटा पावर के मैसेज भी गैर-जिम्मेदाराना हैं। खबरों के मुताबिक, देश में कोयले की भारी कमी ने पंजाब, राजस्थान, दिल्ली और तमिलनाडु सहित कई राज्यों में बिजली उत्पादन को प्रभावित करना

शुरू कर दिया है। आशंका जताई जा रही है कि ये राज्य कभी भी अंधेरे में डूब सकते हैं। चीन के बाद भारत दुनिया का सबसे बड़ा कोयला उपभोक्ता है। जानकारों का कहना है कि कोयले की कमी का संकट पूरी तरह से चरम पर है। कोयले की कमी का कारण इनमें सेकुछ राज्यों में बिजली कटौती शुरू हो गई है जबकि अन्य को आने वाले दिनों में ब्लैकआउट का सामना करना पड़ सकता है। झारखंड, बिहार और आंध्र प्रदेश पर भी संकट मंडरा रहा है। यानी कुल 7 राज्यों में बिजली कटौती का डर है। पंजाब से खबर है कि यहां शनिवार को 5 संयंत्र बंद होने से राज्य भर में 3-4 घंटे की बिजली कटौती हो रही है। राज्य के स्वामित्व वाली पंजाब स्टेट पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड (पीएसपीसीएल) के अधिकारियों ने कहा कि तलवंडी साबो बिजली संयंत्र, रोपड़ संयंत्र में दो-दो इकाइयां और लहर मोहब्बत संयंत्र में एक इकाई बंद कर दी गई है। वहीं दिल्ली में भी जल्द पावर कट शुरू हो सकती है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इसका संकेत दे दिया है। उन्होंने अपने ट्वीट में लिखा, दिल्ली को बिजली संकट का सामना करना पड़ सकता है। मैं व्यक्तिगत रूप से स्थिति पर कड़ी नजर रख रहा हूं। हम इससे बचने की पूरी कोशिश कर रहे हैं।

स्वास्थ्य मंत्री तथा विधायक ने दानदाताओं को किया सम्मानित

मुख्यमंत्री ने बेगमगंज सिविल अस्पताल में जनसहयोग से निर्मित ऑक्सीजन प्लांट का किया वर्चुअल लोकार्पण

रायसेन। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से रायसेन जिले के सिविल अस्पताल बेगमगंज में जनसहयोग से निर्मित ऑक्सीजन प्लांट का वर्चुअल लोकार्पण किया गया। बेगमगंज में आयोजित इस लोकार्पण कार्यक्रम का स्वास्थ्य मंत्री डॉ प्रभुराम चौधरी द्वारा कन्यापूजन तथा दीप प्रज्जवलित कर शुभारंभ किया गया। सिविल अस्पताल में जनसहयोग से एकत्रित की गई 29 लाख रुपए की लागत से 100 एलपीएम क्षमता वाला ऑक्सीजन प्लांट स्थापित किया गया है। उन्होंने कहा कि तीसरी लहर की चर्चा है, जिसे रोकने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रही है। साथ ही तीसरी लहर से निपटने की सारी तैयारी भी कर ली है। ऑक्सीजन बेड से लेकर वेंटिलेटर तक की व्यवस्था कराई है। अस्पतालों को अपग्रेड किया है। बेगमगंज को नवीन सिविल अस्पताल की सौगात मिली है, जिसे भोपाल के अस्पतालों जैसी सुविधा मिलेगी। हमें डेंगू जैसी बीमारी से भी निपटना है। इसके लिए स्वच्छता रखें।

सिविल अस्पताल में होगी सभी जॉचें:- स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि बेगमगंज में आधुनिक पैथालॉजी लैब का भी शुभारंभ हो गया है। अब बेगमगंज सिविल अस्पताल में ही 100 से ज्यादा प्रकार की जॉचें हो सकेंगी। उन्होंने कहा कि जिला अस्पताल के साथ मण्डीदीप, गैरतगंज, बेगमगंज सहित अन्य तहसीलों में 10-10 आईसीयू बेड की व्यवस्था की गई। उन्होंने जनसहयोग से बेगमगंज सिविल अस्पताल में स्थापित किए गए ऑक्सीजन प्लांट के लिए सभी को धन्यवाद दिया। वही सिलवानी विधायक रामपाल सिंह ने कहा कि

उनकी इस पहल से पूरे प्रदेश में बेगमगंज का नाम रौशन हुआ है। जनसहयोग से इस ऑक्सीजन प्लांट को स्थापित कर लोगों ने संदेश दिया है कि जब संकट आता है तो नगर के लोग एकजुट होकर संकट का सामना करते हैं। इस ऑक्सीजन प्लांट के बन जाने से ना सिर्फबेगमगंज बल्कि आसपास के क्षेत्र के लोगों को बहुत लाभ मिलेगा। मरीज की गंभीर स्थिति होने पर भी उसका उपचार किया जा सकेगा। कार्यक्रम में सांसद रमाकांत भार्गव ने कहा कि जनसहयोग से यह जो ऑक्सीजन प्लांट लगाया गया है इसके लिए सभी दानदाताओं का हदय से आभार व्यक्त करता हूँ। बेगमगंज ने जनसहयोग का जो उदाहरण प्रस्तुत किया है उससे दूसरे लोगों को भी प्रेरणा मिलेगी और अन्य क्षेत्रों में भी इस तरह के काम होते रहेंगे।

दानदाताओं को किया गया सम्मानित:- कार्यक्रम में स्वास्थ्य मंत्री डॉ प्रभुराम चौधरी,सिलवानी विधायक रामपाल सिंह द्वारा सिविल अस्पताल में निर्मित ऑक्सीजन प्लांट के लिए सहयोग राशि देने वाले दानदाताओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में कलेक्टर अरविन्द कुमार दुबे ,एसपी विकास कुमार सहवाल, बरेली एसडीएम तथा सीएमएचओ डॉ दिनेश खत्री सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

पाकिस्तान के बाद रायसेन के बाड़ी में विराजमान है मां हिंगलाज

■ विश्व की दूसरी शक्ति पीठ माँ हिंगलाज बाड़ी में नो दिन लगा रहता है भक्तों का तांता

बाड़ी। बाड़ी में नवरात्रि पर्व में नगर के अलावा महानगरों और देश के प्रदेश से श्रद्धालु आते हैं क्योंकि लोगों का

मानना है कि भारतवर्ष में बाड़ी नगर में ही माँ हिंगलाज शक्तिपीठ है इसके अलावा बलूचिस्तान पाकिस्तान में मौजूद। विश्व में माँ हिंगलाज पाकिस्तान के प्रसिद्ध बिलुचिस्तान में माँ हिंगलाज ज्योति रूप में बिराजमान हैं। माँ के भक्त उन्हें नानी कहकर पुकारते हैं और नानी के हज की प्रसिद्धि भारत में ही नहीं विश्व में फैली हुई है। यानी नानी के हज की इच्छा रखने बाला मानव समय पूर्व ही माँ की कृपा का पात्र बन जाता है। ज्योति रूप में माँ का स्वरूप काफी निराला है भक्तों की आँखों की ज्योति बनी नानी हर भक्त की मनोकामना पूर्ण करती है।

बाड़ी में दूसरा शक्तिपीठ:- दूसरा शक्ति पीठ मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल का भोजपुर विधान सभा क्षेत्र का हृदय स्थल बाड़ी के दुसरे छोड़ बाड़ी कला में विन्धयाचल की तल हटी में बसा हुआ है रामजान की खाकी अखाडा मंदिर की बगिया में विराजमान ममता मई माँ हिंगलाज का मनमोहक दरबार लगा हुआ है खाकी अखाडा मंदिर की गादी पर विराजमान बिहंग महंत संत भगवान दास महाराज भगवान मर्यादा पुरुषोत्तम राम के परम भक्त थे।

अतिरिक्त कक्ष निर्माण कार्य का किया शिलान्यास

सांसद श्री भार्गव तथा विधायक श्री सिंह ने सुनावाहा में पीएम ग्राम सड़क

रायसेन। जिले की बेगमगंज जनपद के ग्राम सुनवाहा में सांसद रमाकांत भार्गव तथा सिलवानी विधायक रामपाल सिंह द्वारा प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत सुल्तानगंज से सुनवाहा-सहजपुरी बनने वाली सड़क का शिलान्यास गया। वही शासकीय उमा.विद्यालय सुनवाहा में अतिरिक्त कक्षों के निर्माण कार्य का भी शिलान्यास किया गया। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत सुल्तानगंज से सुनवाहा से सहजपुरी तक 1444.55 लाख रुपए की लागत से 23.40 किलोमीटर लंबी सड़क का निर्माण किया

जाएगा। वही सुनवाहा में अतिरिक्त कक्षों निर्माण कार्य का निर्माण किया जा रहा है। कार्यक्रम में कलेक्टर अरविन्द कुमार दुबे,एसपी विकास कुमार सहवाल, जिला पंचायत सीईओ पीसी शर्मा सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

आज विधायक रामपाल सिंह राजपूत करेगें गावों का दौरा

सिलवानी। विधायक व पूर्व मंत्री रामपाल सिंह राजपूत सोमवार को एक दिनी प्रवास पर आ रहे हैं इस दौरान वह विभिन्न गावों का दौरा कर स्थानीय कार्यक्रम में शामिल होगें। भाजपा मंडल अध्यक्ष पूर्व क्षैत्र दीपक रघुवंषी ने बताया कि विधायक श्री सिंह सोमवार को शाम 4 बजे आदिवासी गांव नारायणपुर तथा रात्रि 7 बजे पड़रिया खुर्द गांव पहुचेंगे। जहां कि वह स्थानीय कार्यक्रम में शामिल होकर ग्रामीणो से संवाद करेगें । श्री रघुवंशी ने ग्रामीणो, भाजपा कार्यकर्ताओ से कार्यक्रम में शामिल होने का आग्रह किया है।

प्रत्येक व्यक्ति को जीव दया धर्म का पालन करना चाहिए:- मुनि समता सागर

सिलवानी। वात्सल्य मुनि समता सागर ने समाजजनो को संबोधित करते हुए कहा की व्यक्ति को ,खुशहाल रहने, टेंशन रहित रहने के लिए पांच पापो का त्याग करना चाहिए। व्यक्ति को आधा अधूरा ज्ञान प्राप्त नही करना चाहिए। अधूरा ज्ञान प्राप्त करने वाला व्यक्ति कभी भी सफलता प्राप्त नही कर सकता है। अधूरा ज्ञान धातक होता है। बगैर ज्ञान पाया हुआ व्यक्ति स्वयं का उद्धार नही कर सकता है। उन्होने बताया कि जीव दया धर्म का पालन करने के लिए व्यक्ति को अपनी सोच, अपनी विचार धारा को सकारात्मक बनाना चाहिए। सकारात्मक विचारो से ही जीवन में सकारात्मकता के भाव आते है। जीव दया धर्म का पालन किए जाने की प्रेरणा भी सकारात्मक विचारो से ही आती है। यहां पर बड़ी संख्या में समाजजन मौजूद रहे।

सियरमऊ गांव में मंगलवार को होगा भजन संध्या का आयोजन

सिलवानी। नगर से लेकर गावों तक शारदीय नवरात्र पर्व आस्था व श्रद्वा के साथ देवी भक्तो के द्वारा मनाया जा रहा हैं। अनेको स्थानो पर देवी दुर्गा की मूर्तियां विराजित की जाकर पूजा अर्चना के कार्यक्रम संपन्न किए जा रहे हैं। स्टेट हाईवे 15 पर स्थित सियरमऊ गांव में श्रद्वालुओं के द्वारा गांव मे विभिन्न स्थानो पर विराजित की गई देवी प्रतिमाओं के समक्ष प्रातः व शाम के समय भजन, पूजन आरती के कार्यक्रम संपन्न किए जा रहे हैं । गांव के पुराना बाजार स्थित दुर्गा उत्सव समिति के सक्रिय कार्यकर्ता भूपेंद्र दुवे ने बताया कि पुराना बाजार स्थित झांकी के समक्ष मंगलवार को रात्रि 8 बजे से भजन संध्या का आयोजन किया जा रहा हैं। जिसमें बुंदेलखण्ड के प्रसिद्व भजन गायक अरविंद्र सिंह ठाकुर के द्वरा साथी कलाकारो के साथ देवी गीत व भजनो की प्रस्तुति दी जाएगी। आयोजक समिति ने श्रद्वालुओं से अधिक संख्या में कार्यक्रम में समय पर शामिल होने का आग्रह कया हैं।

भगवान की भक्ति निस्वार्थ भाव से की जाना चाहिए: पंडित सुंदरदास महाराज

सिलवानी। भगवत भक्ति किए जाने के लिए आयु का बंधन नही होता हैं किसी भी आयु में भगवान की भक्ति की जा सकती हैं । लेकिन आवष्यकता इस बात की है कि भगवान की भक्ति निस्वार्थ भाव से की जाना चाहिए। ना कि स्वार्थ मय होकर । स्वार्थ भाव से की गई भगवान की भक्ति फलदायक नही होती है। यह उद्गार पंडित सुंदरदास महाराज ने व्यक्त किए। वह तहसील मुख्यालय से 4 किलो मीटर दूर स्थित चीचोली गांव में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के तीसरे दिवस रविवार को कथा स्थल पर मौजूद श्रद्वालुओ को सबोधित कर रहे थे। कथा वाचक ने बताया कि बिना निमंत्रण जाने से पहले इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जहां आप जा रहे है वहां आपका इष्ट या अपने गुरु का

अपमान ना हो। यदि ऐसा होने की आशंका हो तो उस स्थान पर नही जाना चाहिए। चाहे वह स्थान जन्म दाता पिता का घर ही क्यो ना हो। उन्होने बताया कि भगवान शिव की बात को नहीं मानने पर सती के पिता के घर जाने से अपमानित होने के कारण स्वयं को अग्नि में स्वाह होना पड़ा।

बरेली में तीन दुकानों के ताले तोड़कर लाखों रुपए की चोरी

रायसेन। जिले के बरेली में फिर चोरों ने तीन दुकानों ताले तोड़कर लाखों रुपए पर हाथ साफ कर लिए। नगर के बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने तीन दुकानों पर अज्ञात चोरों द्वारा चोरी की घटना को अंजाम दिया गया है। दुकानों पर चोरी होने की सूचना मिलते ही पुलिस द्वारा घटनास्थल जांच-पड़ताल की गई। वहीं पुलिस द्वारा आसपास लगे सीसीटीवी कैमरे खंगाले जा रहे हैं। चोरी के संबंध में थाना प्रभारी अमरेश बोहरे ने बताया कि शनिवार रविवार की दरमियानी रात अज्ञात चोरों के द्वारा हरि प्रकाश साहू की ऑनलाइन एवं स्टेशनरी की दुकान के ताले तोड़कर नगद 7 से 8 हजार रुपए चोरी कर लिए। वहीं प्रताप सिंह ठाकुर व्यापारी जिनकी गल्ले की दुकान एवं पास में छोटे भाई शैलेन्द्र सिंह,जिनकी कीटनाशक दवा की दुकान से चोरों द्वारा ताले तोड़कर 2 लाख 80 हजार की राशि पर पार कर दी। चोरी के तत्काल बाद ही पुलिस ने जांच के लिए डॉग स्क्वायड की टीम को बुलाकर जांच शुरू कर दी है।

संपादकीय

कोरोना की मार तो लोगों ने झेल ली लेकिन अब महंगाई की मार कैसे झेलें?

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

दुकानदार हाथ मल रहे हैं कि उनके फल अब बहुत कम बिकते हैं और पड़े-पड़े सड़ जाते हैं। लोगों ने सब्जियाँ और फल खाना कम कर दिया लेकिन दालों के भाव भी दमघोटू हो गए हैं। आम आदमी की जिंदगी पहले ही दूभर थी लेकिन कोरोना ने उसे और दर्दनाक बना दिया है। देश में कोरोना की महामारी घटी तो अब महंगाई की महामारी से लोगों को जूझना पड़ रहा है। कोरोना घटा तो लोग घर की चारदीवारी से बाहर निकल कर बाहर जाना चाहते हैं लेकिन जाएं कैसे ? पेट्रोल के दाम 100 रु. लीटर और डीजल के 90 रु. को पार कर गए। कार-मालिकों को सोचना पड़ रहा है कि क्या करें ? कार बेच दें और बसों, मेट्रो या आटो रिक्शा से जाया करें लेकिन उनके किराए भी कूद-कूदकर आगे बढ़ते जा रहे हैं। पेट्रोल और डीजल की सीधी मार सिर्फ मध्यम वर्ग पर ही नहीं पड़ रही है, गरीब वर्ग भी परेशान है। तेल की कीमत बढ़ी तो खाने-पीने की रोजमर्रा की चीजों के दाम भी आसमान छूने लगे हैं। सब्जियां तो फलों के दाम बिक रही हैं और फल ग्राहकों की पहुंच के बाहर हो रहे हैं। दुकानदार हाथ मल रहे हैं कि उनके फल अब बहुत कम बिकते हैं और पड़े-पड़े सड़ जाते हैं। लोगों ने सब्जियाँ और फल खाना कम कर दिया लेकिन दालों के भाव भी दमघोटू हो गए हैं। आम आदमी की जिंदगी पहले ही दूभर थी लेकिन कोरोना ने उसे और दर्दनाक बना दिया है। सरकारी नौकरों, सांसदों और मंत्रियों के वेतन चाहे ज्यों के त्यों रहे हों लेकिन गैर-सरकारी कर्मचारियों, मजदूरों, घरेलू नौकरों की आमदनी तो लगभग आधी हो गई। उनके मालिकों ने कोरोना-काल में हाथ खड़े कर दिए। वे ही नहीं, इस आफतकाल में पत्रकारों-जैसे समर्थ लोगों की भी बड़ी दुर्दशा हो गई। कई छोटे-मोटे अखबार तो बंद ही हो गए। जो चल रहे हैं, उन्होंने अपने पत्रकारों का वेतन आधा कर दिया और दर्जनों पत्रकारों को विदा ही कर दिया। जो सेवा-निवृत्त पत्रकार लेख लिखकर अपना खर्च चलाते हैं, उन्हें कई अखबारों ने पारिश्रमिक भेजना ही बंद कर दिया। बेचारे दर्जियों और धोबियों की भी शामत आ गई। जब लोग अपने घरों में घिरे रहे तो उन्हें धोबी से कपड़े धुलाने और दर्जी से नए कपड़े सिलाने की जरूरत ही कहां रह गई? भवन-निर्माण का धंधा ठप्प होने के कारण लाखों मजदूर अपने गांवों में ही जाकर पड़े रहे। यही हाल ड्राइवरों का हुआ। बस मौज किसी की रही तो डॉक्टरों और अस्पताल मालिकों की रही। उन्होंने नोटों की बरसात झेली और मालामाल हो गए लेकिन वे डॉक्टर, वे नर्सें और वे कर्मचारी हमेशा श्रद्धा के पात्र बने रहेंगे, जिन्होंने इस महामारी के दौरान मरीजों की लगन से सेवा की और उनमें से कइयों ने अपनी जान की भी परवाह भी नहीं की। वे मनुष्य के रूप में देवता थे।

टिकैत की हठधर्मी के चलते 'अंधे मोड़' पर पहुंच गया है किसान आंदोलन

मासूमों के खून-खराबे से सड़कें और खेत-खलिहान लाल होते रहेंगे। देश की संपत्ति को नुकसान पहुंचाया जाता रहेगा। रेल और सड़क मार्ग बाधित किया जाता रहेगा। आंदोलन के नाम पर बेशकीमती सरकारी जमीन पर बलात कब्जा, आंदोलनकारियों द्वारा जबर्दस्ती बिजली-पानी का बिना किसी तरह का भुगतान किए इस्तेमाल करना किसी भी सूरत में जायज नहीं कहा जा सकता है। आंदोलन के नाम पर हिंसा-आगजनी की वारदातों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

अजय कुमार

नये कृषि कानून के विरोध के नाम पर देश में जिस तरह का माहौल बनाया जा रहा है, उसे सिर्फ मोदी विरोधी बताकर अनदेखा नहीं किया जा सकता है क्योंकि आंदोलन की आड़ में देश विरोधी ताकतें ठीक वैसे ही मंसूबे पाले हुए हैं, जैसे सीएए के खिलाफ आंदोलन के समय देखने को मिले थे। नये कृषि कानून के विरोध के नाम पर कब तक देश की सड़कों, हाई-वे पर अराजकता का माहौल बना रहेगा।

मासूमों के खून-खराबे से सड़कें और खेत-खलिहान लाल होते रहेंगे। देश की संपत्ति को नुकसान पहुंचाया जाता रहेगा। रेल और सड़क मार्ग बाधित किया जाता रहेगा। आंदोलन के नाम पर बेशकीमती सरकारी जमीन पर बलात कब्जा, आंदोलनकारियों द्वारा जबर्दस्ती बिजली-पानी का बिना किसी तरह का भुगतान किए इस्तेमाल करना किसी भी सूरत में जायज नहीं कहा जा सकता है। आंदोलन के नाम पर हिंसा-आगजनी की वारदातों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

खासकर, चुनावी साल में किसी भी छोटी से छोटी घटना का राजनैतिक फायदा लेने के लिए हमारे नेता गिद्धों की तरह कहीं जुट जाते हैं और शर्मनाक बयानबाजी करने लगते हैं, उससे देश की छवि तो खराब होती ही है साथ ही अपराधी भी बच निकलते हैं। नये कृषि कानून के विरोध के नाम पर देश में जिस तरह का माहौल बनाया जा रहा है, उसे सिर्फ मोदी विरोधी बताकर अनदेखा नहीं किया जा सकता है क्योंकि किसान आंदोलन की आड़ में देश विरोधी ताकतें ठीक वैसे ही मंसूबे पाले हुए हैं, जैसे सीएए के खिलाफ आंदोलन के समय देखने को मिले थे। तब भी बड़े पैमाने पर विदेश में बैठी देश विरोधी ताकतों की सक्रियता की जानकारी खुफिया विभाग को मिली थी। इस बार भी ऐसा ही मंजर है। सबसे अच्छी बात यह रही कि सुप्रीम कोर्ट ने लखीमपुर की घटना को स्वतः संज्ञान में लेकर पूरे प्रकरण की जांच शुरू कर दी। अब उम्मीद की जानी चाहिए कि लखीमपुर कांड के गुनाहागार बच नहीं पाएंगे। वैसे यह पहली बार नहीं है जब किसान आंदोलन में हुई हिंसा को सुप्रीम कोर्ट ने अपने संज्ञान में लिया है। पहले भी कई बार सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी और नाराजगी के बाद भी किसान नेताओं के तेवर ढीले नहीं पड़े हैं। सुप्रीम कोर्ट बार-बार कह रहा है कि जो कानून लागू ही नहीं हुआ, उसको खत्म करने के नाम पर आंदोलन कैसे चलाया जा सकता है, लेकिन आंदोलनकारी किसानों को राजनैतिक संरक्षण मिलने की वजह से किसान नेता मोदी सरकार से टकराव की मुद्रा में नजर आ रहे हैं। जबकि कायदे से तो कृषि कानूनों के विरोध में जारी आंदोलन का 26 जनवरी की दिल्ली की घटना के बाद ही पटाक्षेप हो जाना चाहिए था, लेकिन आंदोलन को राजनैतिक संरक्षण के चलते ऐसा नहीं हुआ। संभवतः यह देश का पहला सबसे बड़ा आंदोलन होगा, जिसमें समस्या का समाधान निकालने के लिए दोनों पक्षकारों के बीच किसी तरह की कोई बातचीत ही नहीं हो रही है। यद्यपि सरकार और किसान संगठन लगातार बातचीत की जरूरत बताते रहते हैं, लेकिन इस दिशा में कोई ठोस पहल नहीं हुई तो इसकी वजह यही है कि मोदी सरकार संसद से पास कानून को कुछ लोगों के दबाव में आकर वापस लेकर कोई नई परम्परा नहीं डालना चाहती है, जबकि किसान संशोधन की बजाए कृषि कानून को रद्द कराने की मांग पर अड़े हुए हैं। ऐसा ही दबाव सीएए के खिलाफ आंदोलन के समय भी मोदी सरकार पर डाला गया था।

लखीमपुर की घटना से पूर्व 26 जनवरी को लाल किले की घटना के समय भी सरकार और आंदोलनकारी किसान आमने-सामने आ गए थे।

सरकार बार-बार कह रही है कि किसान संगठन कृषि कानूनों की खामियां बताएं, तो वह उन्हें दूर करने के लिए आगे बढ़े। इसके जवाब में किसान संगठन यह कहते रहे कि तीनों कृषि कानूनों को वापस लेने से कम कुछ भी मंजूर नहीं। सरकार इस पर राजी नहीं हुई, तो किसान संगठन भी अपना आंदोलन जारी रखने पर अड़ गए। उनकी ओर से साफ कहा गया कि जरूरत पड़ी तो 2024 तक या उसके आगे भी किसानों का आंदोलन जारी रहेगा। फिलहाल किसान आंदोलन को शुरू हुए करीब एक वर्ष होने को है और दोनों पक्षों के बीच सहमति तो दूर बातचीत शुरू होने के भी कोई आसार नजर नहीं आ रहे हैं। दोनों ही पक्ष अपने रवैये से टस से मस नहीं होना चाहते हैं। सबसे हास्यास्पद बात यह है कि अपने-अपने रवैये पर अडिग दोनों पक्ष बातचीत की जरूरत भी जताते हैं और इसके साथ एक दूसरे के खिलाफ हमलावर भी हैं। ऐसा लग रहा है कि दोनों ही पक्ष एक-दूसरे को नीचा दिखाने का कोई मौका नहीं गंवाना चाहते हों। कुल मिलाकर पिछले दस महीनों में सरकार और आंदोलनकारी किसानों के बीच सहमति की जगह कटुता और वैमनस्यता ही बढ़ी है। लखीमपुर खीरी की घटना ने दोनों के बीच और अधिक कटुता और वैमनस्य बढ़ाने का ही काम किया है। लखीमपुर की घटना से पूर्व 26 जनवरी को लाल किले की घटना के समय भी सरकार और आंदोलनकारी किसान आमने-सामने आ गए थे। दोनों के बीच काफी टकराव देखने को मिला था। दरअसल, मोदी सरकार और किसान आंदोलनकारियों के बीच जारी लंबे गतिरोध की एक वजह विपक्षी राजनीतिक दलों द्वारा किसान संगठनों के साथ खुलकर खड़ा हो जाना भी है। यह मोदी विरोधी दल किसानों की आड़ लेकर अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए सरकार को कोसते रहे और किसान संगठनों की पीठ थपथपाते रहे। विपक्षी दलों के किसान संगठनों के साथ खड़े होने से उनके और सरकार के बीच जारी गतिरोध कम होने के बजाय और बढ़ गया। यह गतिरोध कहां तक पहुंच गया है, इसका अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि अभी जब प्रधानमंत्री अमेरिका की यात्रा पर गए तो राकेश टिकैत ने ट्वीट कर जो बाइडन से भारत सरकार की शिकायत की। इस गतिरोध से न तो सरकार का कुछ बिगड़ा और न ही किसान संगठनों का, लेकिन उसका भुगतान देश करता रहा है।

कम्युनिस्टों ने कांग्रेस में शामिल होकर देश की सबसे पुरानी पार्टी का डीएनए ही बदल कर रख दिया है

प्रवीण गुगनानी

कम्युनिज्म के प्रणेता व पुरोधा कार्ल मार्क्स थे। वही कार्ल मार्क्स, जिन्होंने अपने मृत्यु समय में प्रसन्नता पूर्वक कहा था- अच्छा हुआ मैं मार्क्सिस्ट न हुआ। कांग्रेस का वामपंथ व मार्क्सिज्म से स्वातंत्र्योत्तर समय के प्रारंभ से गहरा नाता रहा है। विक्रम और बेताल की कथा अब आधी अधूरी दोहराई जा रही है। किंतु इस कथा में अब विक्रम तो है नहीं मात्र बेताल है जो अब विपन्न और विस्थापित कांग्रेस के कंधों पर सवार है। बेताल और कोई नहीं वामपंथ है जिसने बौद्धिक, वैचारिक और सैद्धान्तिक रूप से कांग्रेस को खोखला कर दिया है। भाजपा के नारे कांग्रेस मुक्त भारत पर मैंने एक पुस्तक लिखी थी ÷कांग्रेस मुक्त भारत की अवधारणा÷ इस पुस्तक को मैंने कांग्रेस की आलोचना में नहीं अपितु कांग्रेस के प्रति चिंतित होकर लिखा था। कांग्रेस के प्रति अब उतना चिंतित नहीं रहना चाहिए। कांग्रेस आत्मघात के परम मूड में है। विशेषतः अब कन्हैया कुमार के कांग्रेस में उत्सवपूर्वक स्वागत व प्रवेश के बाद तो यह

स्पष्ट हो गया है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी ने अब तक की सबसे बड़ी वर्जना को तोड़ा है, एक युग पार कर लिया है। किसानों को कुचलने वाले व्यक्ति को हिरासत में नहीं लेने का मतलब कि संविधान खतरे में है÷ राहुल गांधी भारत की आजादी में भूमिका निभाने वाली कांग्रेस अब हम लेकर रहेंगे आजादी भारत से का नारा लगाने वालों के साथ ही नहीं बल्कि ऐसे देशद्रोही तत्वों की दया, कृपा, संबल, के साथ खड़ी दिख रही है। कन्हैया कुमार ने हमारी न्यायपालिका को हत्यारा कहा, हमारी वीर सेना को बलात्कारी कहा, भारत तेरे टुकड़े होंगे कहा, अफजल हम शर्मिंदा हैं कहा, और फिर वे कांग्रेस में प्रवेश पाने योग्य समझ लिए गए। उन्होंने कांग्रेस प्रवेश के समय जो कहा वह तो निस्संदेह कांग्रेसियों के लिए लाज-लज्जा से डूब मरने वाली बात है। कन्हैया ने कहा- यदि देश की सबसे बड़ी विपक्षी दल को नहीं बचाया गया तो देश डूब जाएगा। अर्थात, कांग्रेस डूब रही है और कांग्रेस को डूबने से बचाने के लिए कन्हैया का कांग्रेस प्रवेश ही एकमात्र उपाय है अब। आश्चर्य है कि पूरे देश में चल रहा यह चुटकुला राहुल गांधी की कांग्रेस को समझ नहीं आ रहा है। कम्युनिज्म के प्रणेता व पुरोधा कार्ल मार्क्स थे। वही कार्ल मार्क्स, जिन्होंने अपने मृत्यु समय में प्रसन्नता पूर्वक कहा था- अच्छा हुआ मैं मार्क्सिस्ट न हुआ। कांग्रेस का वामपंथ व मार्क्सिज्म से स्वातंत्र्योत्तर समय के प्रारंभ से गहरा नाता रहा है। कांग्रेस के पास कोई वैचारिक आधार, आर्थिक विचार, विकास की अवधारणा, सामाजिक अवधारणा तो थी ही नहीं।

लखीमपुर खीरी प्रकरण बड़ी साजिश है, जाँच में कई चौंकाने वाली बात सामने आ सकती हैं

अशोक मधुप

किसान आंदोलन में लोगों को तोड़फोड़ के लिए उकसाने वाले अलगाववादी संगठन सिख फॉर जस्टिस का मुखिया गुरपतवंत सिंह पन्नू का बयान आने के बाद यह साफ होता जा रहा है कि लखीमपुर खीरी प्रकरण अपने आप नहीं हुआ। इसके पीछे साजिश की बू आने लगी है। लखीमपुर खीरी प्रकरण में मृतकों का अंतिम संस्कार भले ही हो गया हो, पर इस प्रकरण को लेकर राजनीति जारी है। चिंगारी अभी दहक रही है। किसान नेताओं ने मृतकों की अरदास 12 अक्तूबर को उसी जगह करने की घोषणा ही है, जहां आंदोलनकारी किसानों की मौत हुई है। वे केंद्रीय गृह राज्यमंत्री अजय मिश्र की बर्खास्तगी की मांग पर अड़े हैं। इस प्रकरण को लेकर देशभर में राजनीति हो रही है। महाराष्ट्र में तो शिवसेना नीत गठबंधन ने 11 अक्तूबर को बंद का आह्वान किया है। विपक्ष के नेता सक्रिय हुए तो दो प्रदेश के कांग्रेसी मुख्यमंत्री भी आगे आए। यह भी स्पष्ट हो रहा

है कि राज्यों के मुख्यमंत्री सरकारी कोष को अपनी संपदा समझकर इस्तेमाल कर रहे हैं। मनमर्जी से उसका प्रयोग हो रहा है। उनसे पूछने वाला नहीं, कोई रोकने वाला नहीं। किसान आंदोलन में लोगों को तोड़फोड़ के लिए उकसाने वाले अलगाववादी संगठन सिख फॉर जस्टिस का मुखिया गुरपतवंत सिंह पन्नू का बयान आने के बाद यह साफ होता जा रहा है कि लखीमपुर खीरी प्रकरण अपने आप नहीं हुआ। इसके पीछे साजिश की बू आने लगी है। पन्नू ने मृतकों के परिवारों से कहा है कि वह उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा दी गई मुआवजा राशि को लेने से मना कर दें।

वुमन कार ड्राइवर: पुरुषों से बेहतर ड्राइविंग करती हैं महिलाएं

क्या औरतों को ट्रक चलाने की जिम्मेदारी मिल जाए तो सड़कें ज्यादा सेफ होंगी

आज के दौर में महिलाएं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलकर चलने को तैयार दिखती हैं। पर जब बात महिलाओं की ड्राइविंग की आती है तो ये चर्चा का विषय बन जाता है। वजह ये कि पुरुष मानते हैं कि महिलाएं बेहतर ड्राइव नहीं करती हैं। कुछ दिनों पहले मध्यप्रदेश के देवास की 90 साल की महिला का कार चलाने का वीडियो सामने आया था।

इस उम्र में भी वे इस तरह से सधे हुए हाथों से ड्राइविंग कर रही थी कि मानो सालों से कार चलाती आई हों। वैसे स्टडीज भी ये बात कहती हैं कि महिलाएं पुरुषों की बजाए ज्यादा बेहतर ड्राइविंग कर पाती हैं। ये बात जर्नल इंजरी प्रिवेंशन में प्रकाशित शोध में भी साबित हो चुकी है कि पुरुषों की तुलना में महिलाएं अच्छी ड्राइवर होती हैं। पुरुष खतरनाक तरीके से ड्राइविंग कर अपनी और दूसरों की जान खतरे में डालते हैं। इसमें ये बात भी सामने आई कि यदि महिलाओं को ट्रक चलाने की जिम्मेदारी मिले तो सड़कें काफी सुरक्षित होंगी।

वाकई महिलाएं बेहतर ड्राइवर?

विश्व स्वास्थ्य संगठन (ङ्ख॥ह्र) की रिपोर्ट की मानें तो सड़क हादसों में 5 करोड़ से अधिक लोग सीटबेल्ट न लगाने, ड्राइविंग के दौरान ध्यान भटकने और हेलमेट न पहनने की वजह से घायल होते हैं। वहीं, इन वजहों से करीब 10 लाख लोगों की मौत भी हो जाती है। इसमें ये भी पता चला कि सबसे कम सड़क हादसे नॉर्वे में होते हैं। नॉर्वे के इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनॉमिक्स के सर्वे में पाया गया कि कार ड्राइव करते हुए पुरुषों का ज्यादा ध्यान भटकता है। महिलाएं कार ड्राइविंग करते हुए सड़क पर ज्यादा ध्यान रखती है।

कार खरीदने में भी महिलाओं की हिस्सेदारी बढ़ी अलर्ट माइंड, सावधानी, प्रैक्टिस और सही ट्रेनिंग.. ये सब गुण एक अच्छे ड्राइवर के लिए सबसे ज्यादा जरुरी हैं। ड्राइविंग के गुण को लिंग के आधार पर नहीं बांटा जा सकता। यही कारण है कि अब सिर्फ पुरुष ही नहीं, बल्कि महिलाएं भी कार ड्राइव करने में पीछे नहीं है। वे ड्राइविंग केवल जरुरत के लिए नहीं, बल्कि शौकिया और लंबे ट्रैवल के लिए भी इस्तेमाल करने लगी हैं। देश की सबसे बड़ी कार निर्माता मारुति सुजुकी की मानें तो महिला कार खरीदारों की हिस्सेदारी 7त्न से बढ़कर 12त्न हो गई है। हुंडई मोटर में 2014 के बाद से 3त्न बढ़ गई है।

कार पार्किंग के मामले में भी महिलाएं बेहतर

बात सिर्फ सेफ ड्राइविंग तक ही सीमित नहीं। एक शोध में ये भी साबित हो चुका है कि कार पार्किंग के मामले में भी महिलाएं पुरुषों से कहीं बेहतर होती हैं। पार्किंग के लिए तलाशने और कम जगह में भी सही तरीके से गाड़ी पार्क करने में पुरुषों की तुलना में ज्यादा समझदारी से काम लेती हैं। हालांकि, कार पार्क करने में वे थोड़ा ज्यादा समय लेती हैं। एक रिपोर्ट की मानें तो मुंबई शहर में बीते कुछ वर्षों के अंदर महिला कार ड्राइवर्स की संख्या में इजाफा हुआ है। यहां करीब 30 लाख महिलाओं के पास वैध ड्राइविंग लाइसेंस हैं। इसका मतलब है कि कुल 88 लाख ड्राइविंग लाइसेंस में से करीब 35त्न महिला ड्राइवर हैं। इनमें करीब 40त्न 18 से 20 वर्ष की आयु की लड़कियां शामिल हैं।

सावधानी जरूरी: बिगनर्स जिम में ना करें ये गलतियां

विशेषज्ञ से जानें किन बातों का रखें विशेष ख्याल

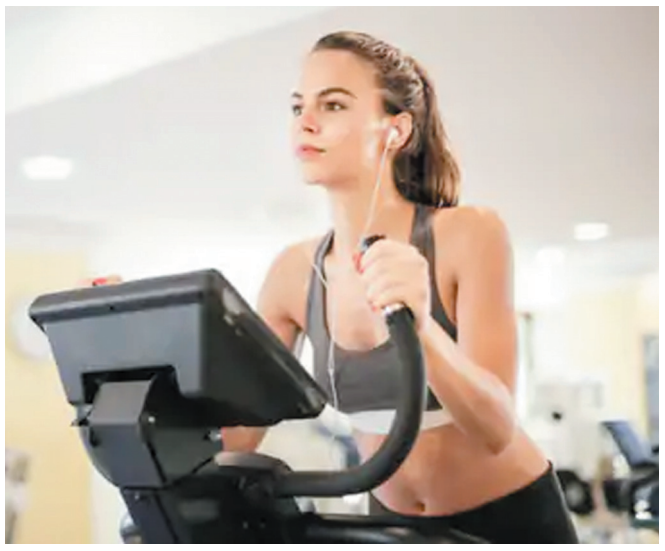

नई दिल्ली। कोरोना वायरस के दस्तक देते ही हम सब की भागती-दौड़ती जिंदगी की रफ्तार पर ब्रेक लग गई। महामारी ने हम सबको हेल्दी लाइफस्टाइल ?जीने और खुद को फिट रखने की सीख दी है। इसी का नतीजा है कि लोगों ने जिंदगी में कुछ अच्छी आदतों को शामिल करना शुरू कर दिया है। लोग हेल्दी फूड और व्यायाम को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने लगे हैं। लॉकडाउन ढील दिए जाने के बाद से जिम में लोगों की संख्या बढ़ गई है। अगर आपने भी अभी-अभी जिम ज्वाइन किया है तो जिम ट्रेनर योगेश उपाध्याय से जान लें कुछ जरूरी बातें ताकि शुरुआती दौर की कोई गलती आपको परेशानी में न डाल दे... योगेश उपाध्याय बताते हैं कि लॉकडाउन में ढील दिए जाने के बाद से वर्कआउट के लिए आने वाले लोगों की संख्या में बढ़ोतरी जारी है। हालांकि, जिम में आकर वर्कआउट करने वाले हर एक सदस्य का उद्देश्य अलग-अलग होता है। किसी को फिट होना है, बॉडी बनानी है तो किसी को अपनी स्ट्रेंथ बढ़ानी है। वर्कआउट के लिए आने वाले लोगों बहुत कम समय में ज्यादा वर्कआउट कर जल्दी फिट हो जाना चा?हते हैं, खासकर महिलाएं। ऐसे में वे शुरुआत से ही हैवी वर्कआउट और डाइट फॉलो करना शुरू कर देती हैं। कई तो डाइट के चक्कर में खाना-पीना ही छोड़ देती हैं। इसके चलते कई बार डिहाइड्रेशन, चक्कर आना, घबराहट होना, सारे वक्त थकान और शरीर में दर्द महसूस होने जैसी समस्याएं हो जाती हैं।

हैवी वेट से न करें शुरुआत

जिम ट्रेनर योगेश का कहना है कि शुरुआती दौर में कुछ आसान एक्सरसाइज से शुरुआत करनी चाहिए। शुरू में हैवी वेट उठाने की कोशिश बिल्कुल भी नहीं करनी चाहिए क्योंकि इससे आपकी मसल्स चोटिल हो सकती हैं। शुरुआत में जिम ट्रेनर की ओर से दिया गया वर्कआउट प्लान ही फॉलो किया जाए तो ज्यादा बेहतर रहेगा। हालांकि, बाद में आप अपनी जरूरत के मुताबिक, ट्रेनर से बात करके वर्कआउट प्लान में चेंज करवा सकते हैं।

खाने-पीने का रखें विशेष ख्याल

वर्कआउट के दौरान खाने-पीने का विशेष ख्याल रखा जाना चाहिए। वर्कआउट के दौरान जमकर पसीना बहता है, ऐसे में शरीर में पानी की मात्रा कम हो जाती है। शरीर में पानी की मात्रा बनाए रखने के लिए जरूरी है कि खूब पानी पिएं। जिन लोगों को वेट गेन करना है या फिर वजन घटाना-बढ़ाना नहीं है बस फिट रहना है, वे लोग पानी में ग्लूकोज? मिलाकर पिएं। वहीं जो लोग वजन कम करना चाहते हैं, वे पानी में नीबू और काला नमक डालकर पिएं। योगेश बताते हैं कि वर्कआउट कभी भी खाली पेट नहीं करना चाहिए। सुबह में एक सेब या केला खाकर वर्कआउट करें।

डॉक्टर से परामर्श करें.. वरिष्ठ फिजीशियन डॉक्टर एन के शर्मा कहते हैं कि वजन कम करने की चाह में कई लोग वर्कआउट शुरू करते ही खाना-पीना छोड़ देते हैं, जोकि सेहत के लिए ठीक नहीं है। खानपान में लापरवाही के चलते डिहाइड्रेशन और वीकनेस हो जाती है। इसके चलते कई और बीमारियां भी घेर लेती हैं। इसलिए जरूरी है कि वर्कआउट के दौरान डाइट में सभी पोषक तत्व मौजूद हों।

शॉपिंग स्ट्रेस से बचें: शॉपिंग बजट कम करने के 10 आसान तरीके

फेस्टिव सीजन में शॉपिंग का बजट बढ़ जाता है, जिससे कई बार स्ट्रेस भी हो जाता है। त्योहारों में कम बजट में कैसे करें स्मार्ट शॉपिंग ये जानने के लिए भास्कर वुमन ने बात की फैशन स्टाइलिश सोनल जैन से। आप भी सोनल के बताए टिप्स ट्राई करके अपना शॉपिंग स्ट्रेस कम कर सकती हैं। थोड़े पैसे खर्च करके अपने कलेक्शन में एक स्टेटमेंट पीस जरूर रखें। आजकल जैकेट, ज्वेल्ड बेल्ट और हैवी ज्वेलरी फैशन में हैं, आप इन पर खर्च करके अलग-अलग स्टाइलिंग ट्राई कर सकती हैं। अपने पुराने लहंगे के साथ जैकेट और ज्वेल्ड बेल्ट पहन लें, इससे आपके लहंगे का इस्तेमाल हो जाएगा और आपको फ्यूजन लुक मिलेगा। इस लुक के साथ आप चोकर पहन सकती हैं। पुराने लहंगे के साथ प्लेन शर्ट पहनकर उसके साथ हैवी नेकपीस पहनें, ये लुक आजकल फैशन में है। माधुरी दीक्षित ने हाल में डांस दीवाने 3 के सेट पर ये लुक ट्राई किया था और उनका ये आउटफिट काफी पसंद किया गया। प्लेन शर्ट के साथ जामेवार पैंट पहनें और हैवी ज्वेलरी से लुक कम्प्लीट करें।

आंखें रहेंगी हमेशा सेहतमंद: आंखों में होने वाली जलन या ड्राइनेस से परेशान हैं तो दवाओं के बजाए अपनाएं ये आसान घरेलू उपाय

आंसू हर बार अच्छे भले न होते हों, लेकिन जब ये नहीं बनते हैं तो आंखें सूख जाती हैं। कई बार कंप्यूटर पर काम करने में लोग इतने मग्न हो जाते हैं कि लंबे समय के लिए पलकें तक नहीं झपकाते। कंप्यूटर स्क्रीन की लाइट आंखों के पानी को सुखा देती है। ऐसे में दूसरे व्यक्ति से आई कॉन्टैक्ट करना तो मुश्किल होता ही है, साथ ही आंखों में दर्द रहने लगता है। नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. सहाना मजूमदार बताती हैं आंखों में पानी सूखने के कारण होने वाली ड्राइनेस को खत्म करना बेहद जरुरी है। आंखों में जलन, खुजली, इंफेक्शन, लाल होना या आंख में कुछ चले जाने पर कई लोग मेडिकल स्टोर से आई ड्रोप लेकर डाल लेते हैं, लेकिन कुछ ऐसे घरेलू उपाय भी हैं जो आपकी परेशानी को चुटकियों में दूर कर सकते हैं।

आंखों में ड्राइनेस दूर करने के घरेलू उपचार

नारियल तेल- नारियल तेल में ऐंटी-इन्फ्लेमेटरी गुण होने की वजह से आंखों की चुभन कम होती है। यह तेल आंखों को नमी देने वाले एजेंट की तरह भी काम करता है। कॉटन बॉल को नारियल तेल में डुबोएं। इसके बाद करीब 15 मिनट तक आंखों पर रखें। इस प्रोसेस को दिनभर में कई बार दोहराएं।

मैरिज मार्केट की डिमांड है वर्किंग गर्ल: लड़कियों का कहना, घर का काम भी करें और कमाकर भी लाकर दें, लड़के वाले हमें एटीएम मशीन न समझें

'31 साल की आरती प्रजापति पिछले दो सालों से लड़का ढूंढ रही हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय में गेस्ट टीचर रह चुकी हैं और अभी एक रिसर्चर हैं। वे कहती हैं,'मैट्रीमोनियल साइट्स पर जो लड़के मिलते हैं। उनकी पहली डिमांड पढ़ी-लिखी और वर्किंग लड़की होती है। वर्किंग भी हो और उनके शहर की भी हो। मैं दहेज के बिल्कुल खिलाफ हूं, जैसे ही ये बात लड़कों को कहती हूं तो वे पूछते हैं आपकी सैलरी कितनी है? स्कॉलरशिप मिलती है? सैलरी का कितना हिस्सा परिवार में दे पाएंगी? वे सीधे-सीधे दहेज नहीं मांगते, बल्कि उनके दहेज की फरमाइश तन्ख्वाह, लड़की घर में कितना पैसा देगी, उसको मिलने वाली स्कॉलरशिप जैसे सवालों से होकर गुजरती है।'

आरती प्रजापति

वर्किंग लड़कियां जब शादी के लिए लड़के देखना शुरू करती हैं, तब कुछ बातें उन्हीं पूरी तरह शादी को लेकर मन खट्टा कर देती हैं या लड़के वालों का ये ढोंग कि हमारी कोई डिमांड नहीं, उससे दुखी हो जाती हैं। ऐसे में एक पढ़ी-लिखी लड़की अगर खुद को एक ब्लैंक चैक की तरह समझती है तो वो गलत नहीं सोचती। क्योंकि वो हर महीने जो कमा रही है वो ससुराल का है, लेकिन शादी से पहले लड़के वालों की घुमा फिराकर जो डिमांड होती है, वहां शादी प्यार भरे रिश्ते के बजाए एक फाइनेंशियल डील बन जाती है। आरती कहती हैं, उन्होंने बचपन से अपनी मां को पिताजी से पैसे मांगते देखा। अपनी शादी के बाद वे पति के आगे हाथ नहीं फैला सकतीं, इसलिए नौकरी की सोची। अब इतना पढ़ने-लिखने के बाद भी लड़के गोल रोटी बनाने वाली लड़की और अच्छा पैसा कमाने वाली देखेंगे तो ये दोनों चीजें नहीं मिल पाएंगी। हम एटीएम मशीन नहीं हैं। हम लड़कियां तो परिवार में बराबरी को समझती हैं, लेकिन लड़के वाले या लड़का नहीं समझता। वे वर्किंग लड़की तो ढूंढ लेते हैं, लेकिन किचन के काम का बराबर बंटवारा नहीं कर पाते। 35 साल की अकांक्षा सक्सेना एक टीचर और समाजसेविका हैं। वे बताती हैं, लड़कियां वर्किंग रहना चाहती हैं, लेकिन शादी के बाद उन्हें उसकी भी कीमत चुकानी पड़ती। वे घर और नौकरी दोनों के बीच पिसने लगती हैं। मेंटली और फिजिकली दोनों रूपों में परेशान होती हैं। क्योंकि हमने लड़कों की ऐसी ट्रेनिंग नहीं दी है कि वे घर के कामों को बराबर रूप से देखें। अब लड़के वालों की वर्किंग लड़की की डिमांड मंथली इंस्टॉलमेंट बन गई है और दहेज डाउन पेमेंट।

सामंथा-नागा चैतन्य का तलाक

सामंथा के अबॉर्शन की खबरों पर उनकी फिल्म शकुंतलम की प्रोड्यूसर बोलीं,वो नागा चैतन्य के साथ बेबी प्लानिंग कर रही थीं, फिल्म साइन नहीं करना चाहती थीं

हाल ही में साउथ एक्ट्रेस सामंथा रुथ प्रभु ने उन खबरों पर आपत्ति जताई है जिनमें नागा चैतन्य से तलाक के बाद कहा जा रहा था कि सामंथा बच्चे नहीं चाहती थीं, उनके कई अफेयर थे और उन्होंने कई अबॉर्शन भी करवाए थे। अब उनके सपोर्ट में उनकी अपकमिंग फिल्म शकुंतलम की प्रोड्यूसर नीलिमा गुना भी उतर आई हैं। नीलिमा ने खुलासा किया है कि अफवाहों से उलट सामंथा फैमिली प्लानिंग कर रही थीं और उन्होंने इस वजह से उनकी फिल्म में काम करने तक से मना कर दिया था। नीलिमा ने कहा, जब मेरे पिता गुनाशेखर ने पिछले साल सामंथा को फिल्म शकुंतलम के लिए अप्रोच किया था तो उन्हें स्क्रिप्ट काफी पसंद आई थी और वो इसका हिस्सा बनने के लिए काफी उत्साहित थीं। लेकिन उन्होंने कहा कि इस फिल्म की शूटिंग जुलाई या अगस्त तक खत्म होगी और वो तो नागा चैतन्य के साथ फैमिली प्लानिंग कर रही हैं।

नीलिमा ने आगे कहा, वो मां बनना चाहती थीं, उन्होंने मुझसे कहा कि ये उनकी प्रायोरिटी है। पीरियड फिल्में बनने में समय लेती हैं और इस वजह से वो इसे साइन करने में हिचकिचा रही थीं। लेकिन हमने उनसे कहा कि एक्स्टेंसिव प्री-प्रोडक्शन का काम पहले ही निपटाया जा चुका है इसलिए काफी समय बच जाएगा। ये बात सुनकर वो खुश हुई थीं और ऑन-बोर्ड आने के लिए मान गई थीं।

क्या लिखा था सामंथा ने?

सामंथा ने अपने फैन्स को धन्यवाद देते हुए नोट शुरू किया और लिखा, अपने पर्सनल क्राइसिस में आप सबका इमोशनल इंवेस्टमेंट देखकर मैं अभिभूत हूं। गलत अफवाहों और खबरों के बीच मुझ पर अपनी गहन सहानुभूति और चिंता दिखाने की वजह से मैं आप सबकी आभारी हूं। वे कहते हैं कि मेरे कई अफेयर्स हैं, मैं कभी बच्चे नहीं चाहती थीं, मैं मौका परस्त हूं और अब ये खबरें हैं कि मैंने कई अबॉर्शन करवाए।

सामंथा की पोस्ट।

सामंथा ने आगे लिखा, तलाक अपने आप में एक बेहद दर्दनाक प्रक्रिया है। मुझे अकेले इससे उबरने का मौका दीजिए। मुझ पर इस तरह के पर्सनल अटैक बेहद कठोर हैं लेकिन मैं आप सबसे वादा करती हूं कि इस तरह की बातों से मैं खुद को टूटने नहीं दूंगी।

2 अक्टूबर को अनाउंस किया था तलाक

सामंथा ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर 2 अक्टूबर को लिखा था, हमारे सभी शुभचिंतकों के लिए- कई विचार-विमर्श और विचारों के बाद मैंने और चाई (नागा चैतन्य) ने अपने रास्ते पर चलने के लिए पति-पत्नी के रूप में अलग होने का फैसला किया है। हम सौभाग्यशाली हैं कि एक दशक से अधिक की दोस्ती हमारे रिश्ते का मूल हिस्सा थी और हमें विश्वास है।

सुपर डांसर 4: असम की फ्लोरिना गोगोई बनीं शो की विनर

सुपर डांसर चैप्टर 4 को यंग डांसर फ्लोरिना गोगोई और उनके सुपर गुरु तुषार शेट्टी के रूप में विनर मिल गया है। इस शो को शिल्पा शेट्टी, गीता कपूर और अनुराग बसु जज करते हैं। कर्नाटक के पृथ्वीराज दूसरे स्थान पर, पंजाब के संचित चनाना तीसरे स्थान पर, मध्य प्रदेश की नीरजा तिवारी चौथे नंबर पर और पांचवें नंबर पर दिल्ली की ईशा मिश्रा रहीं। फ्लोरिना गोगोई प्रतिष्ठित ट्रॉफी और 15 लाख रुपए की पुरस्कार राशि अपने घर ले गई हैं। इस बीच, तुषार को 5 लाख रुपए के चेक से नवाजा गया। बाकी अन्य चार कंटेस्टेंट को 1-1 लाख रुपये मिले। इसके अलावा पांचों फाइनलिस्ट को शो के स्पॉन्सर्स की ओर से रेफ्रिजरेटर, एयर प्यूरीफायर और 51 हजार फिक्स्ड डिपॉजिट का सर्टिफिकेट मिला।

इंडियाज बेस्ट डांसर: शो की लॉन्चिंग पर पहुंचीं मलाइका अरोड़ा के कंटेस्टेंट ने छू लिए गाल

एक्ट्रेस बोलीं-कुछ सेकंड के लिए मैं बेहद डर गई थी

डांस रियलटी शो इंडियाज बेस्ट डांसर का सेकंड सीजन जल्द शुरू होने जा रहा है। इस बार शो की टैगलाइन है बेस्ट का नेक्स्ट। इस शो में मलाइका अरोड़ा, गीता कपूर और टेरेंस लुईस जज बने नज़र आएंगे। 2020 में इस शो के पहले सीजन में भी यही तीनों जज थे।

कंटेस्टेंट ने छू लिए मलाइका के गाल: हाल ही में शो की लॉन्चिंग हुई जिसमें मलाइका भी पहुंचीं। इस दौरान मलाइका तब सन्न रह गईं जब एक कंटेस्टेंट ने उनके गालों को छू लिया। मलाइका ने इस बारे में एक इंटरव्यू में बताया, मैं बहुत डर गई थी क्योंकि ये कोविड का समय है। वो कंटेस्टेंट अचानक मेरे पास आया और मेरे गालों को छूने लगा। मैं बहुत डर गई।

कोरोना से जूझ चुकी हैं मलाइका

आपको बता दें कि 2020 में मलाइका को कोरोना हो चुका है। तकरीबन एक महीने की जद्दोजहद के बाद वह इससे रिकवर हो पाई थीं। इसके बाद मलाइका ने वैक्सीन के दोनों डोज लगवा लिए थे। बहरहाल, मलाइका के गाल छूने वाले इंसिडेंट पर गीता कपूर ने कहा, ऐसी घटना बहुत ही कम देखने को मिलती है क्योंकि वो (मलाइका) इतनी बड़ी पर्सनालिटी हैं, कौन उनके गाल छूने की हिम्मत करेगा? यहां तक कि हमारी ऐसी हिम्मत नहीं है लेकिन उस लड़के में गट्स थे और ये सब काफी स्वीट भी था।

फिल्म डिले: दोस्ताना 2 की शूटिंग महीने भर आगे खिसकी

2 नवंबर तक जाह्नवी कपूर देहरादून में मिली के शूट में व्यस्त

कोविड काल ने सितारों के शूट शेड्यूल को बुरी तरह से प्रभावित किया है। मिसाल के तौर पर ऋतिक रोशन की फिल्म विक्रम वेदा चार महीने आगे खिसक चुकी है। अजय देवगन की फिल्म मेडे दो महीने पहले दोहा वाला शेड्यूल पूरा कर चुकी होती, मगर अब वहीं सीक?वेंस रूस में 18 अक्टूबर से होगा। कट्रीना कैफ की मेरी क्रिसमस के दो महीने बाद भी शुरू होने पर डाउट है। शेड्यूल खिसकने का साइड इफेक?ट जाह्नवी कपूर की फिल्म दोस्ताना 2 को झेलना पड़ रहा है। धर्मा प्रोडक्शन्स की फिल्मों पर लगातार नजर रख रहे ट्रेड सोर्सेज ने इसकी पुष्टि की है।

जाह्नवी कर रही हैं मिली की शूटिंग देहरादून में

जाह्नवी कपूर के करीबियों ने इसकी वजह जाहिर की है। उन्होंने इस बारे में कहा, जाह्नवी अपने पापा के बैनर की फिल?म मिली देहरादून में शूट कर रही हैं। उसका तय शेड्यूल सितंबर ही था, मगर वो एक महीने आगे खिसक गई है। अब अक्टूबर से लेकर दो नवंबर तक उसका शेड्यूल है। शेड्यूल की पुष्टि शूट अरेंज कर रहे मयंक तिवारी ने भी की और दैनिक भास्कर से बातचीत में कहा, पूरी फिल्म उत्तराखंड के बस दो लोकेशन्स देहरादून और ऋषिकेश में शूट होगी।

रेखा के बर्थडे पर सुमन: रेखा के साथ अपने शूटिंग एक्सपीरिएंस पर शेखर सुमन बोले- उत्सव में इरॉटिक सीन देने में पसीने छूट जाते थे

मुंबई। मृच्छकटिकम नाटक पर कामसूत्र के खूबसूरत प्रयोग के साथ रेखा और शेखर सुमन की इरॉटिक फिल्म %उत्सव% भारतीय सिनेमा की यादगार फिल्म है। इसमें उन 64 कलाओं को सिल्वर स्क्रीन पर खूबसूरती से उतारा गया जो वात्सायन के कामसूत्र का आधार थे। साल 1984 में आई यह फिल्म शेखर सुमन की डेब्यू फिल्म थी। रेखा जैसी दिग्गज और मंझी अदाकारा के सामने भी किसी शेखर सुमन जैसे नए कलाकार का खड़ा होना भी मुश्किल था। ऐसे में इस इरॉटिक फिल्म में उन्हें रेखा के साथ कई इंटीमेट सीन देने थे। वह बताते हैं मेरे लिए वह सबसे ज़्यादा मुश्किल था।

रेखा के साथ अंग्रेजी वाली उत्सव में ज्यादा इरॉटिक सीन

यह फिल्म हिंदी और इंटरनेशनल सिनेमा के लिए अंग्रेजी में बनी। इसलिए एक सीन की शूटिंग दो बार होती थी। अंग्रेजी में बनने वाली फिल्म हिंदी के मुकाबले ज्यादा इरॉटिक सीन थे। फिल्म में ग्लैमर, खूबसूरती, टैलेंट और

इरॉटिक सीन के चलते रेखा को आज भी याद किया जाता है। शेखर सुमन बताते हैं कि फिल्म के प्रोड्यूसर शशि कपूर और निदेशक गिरीश कर्नाड ने मुझे रेखा के अपॉजिट 16 अदाकारों में से चुना था।

रेखा ने हर सीन में सपोर्ट किया

फिल्म में रेखा एक नगरवधु (गणिका) वसंतसेना के रोल में है। पुराना भारत में नगरवधु को बहुत इज्जत मिलती थी। उसे मूर्ख राजा की बजाय गरीब शेखर सुमन से मोहब्बत हो जाती है। शेखर सुमन बताते हैं कि शूटिंग के वक्त रेखा समझ गईं थी कि मैं इंटीमेट सीन देने में लड़खड़ा रहा हूं। इसलिए शूटिंग से पहले उन्होंने मुझसे खूब बातें की, मुझे अपने साथ इजी किया। शेखर के मुताबिक अपने काम को लेकर रेखा जैसी प्रोफेशनल एक्ट्रेस शायद ही कोई हो, रेखा का कहना था कि गिरीश कर्नाड और शशि कपूर ने अगर शेखर सुमन को चुना है तो कुछ सोचकर चुना होगा। उन्होंने इसपर रत्ती भर सवाल नहीं किया। रेखा ने एक जूनियर की तरह शेखर सुमन को हर सीन में सपोर्ट किया।

■ टीएसएमसी का प्रभुत्व सभी देशों के लिए सिरदर्द बना

चिप की कमी से 169 उद्योगों में उत्पादन पर असर; इस साल 39 लाख कारें कम बनेंगी

नई दिल्ली। इस समय दुनियाभर में सेमी कंडक्टर चिप्स की कमी महसूस की जा रही है। गोल्डमैन सॉक्स के अनुसार 169 उद्योग चिप की कमी से जूझ रहे हैं। स्टील, कांक्रीट, एयरकंडीशनिंग, ब्रूअरीज, इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटो से लेकर कई इंडस्ट्री प्रभावित हैं। अमेरिका, जापान, यूरोप और एशिया में वाहनों का उत्पादन धीमा पड़ गया है। इस साल पिछले साल के मुकाबले 39 लाख कारों का प्रोडक्शन कम हो सकता है। इस मौके पर विश्व का ध्यान चिप बनाने वाली सबसे बड़ी ताइवानी कंपनी- ताइवान सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी (टीएसएमसी) की ओर है। कंपनी के हाथ में चिप के ग्लोबल मार्केट का आधे से ज्यादा हिस्सा है। अनुमान है, कंपनी 90त्न आधुनिक माइक्रो प्रोसेसर सप्लाई करती है।

टीएसएमसी का प्रभुत्व सभी देशों के लिए सिरदर्द बना

टीएसएमसी का प्रभुत्व सभी देशों के लिए सिरदर्द साबित हो रहा है। अमेरिकी रक्षा विभाग- पेंटागन राष्ट्रपति बाइडेन के प्रशासन पर आधुनिक चिप्स के निर्माण में अधिक पैसा लगाने के लिए दबाव डाल रहा है ताकि उसकी मिसाइल और लड़ाकू विमान ताइवान पर निर्भर न रहें। ताइवान पर चीन की टेढ़ी नजर है। राष्ट्रपति शी जिन पिंग उसे चीन का अलग हुआ प्रांत मानते हैं। उन्होंने ताइवान पर हमले की धमकी दी है। इस बीच कार कंपनियों ने चिप्स की कमी के लिए टीएसएमसी पर उंगली उठाई है। लेकिन कंपनी के चेयरमैन मार्क लियू का कहना है, कार कंपनियां हमारी ग्राहक हैं। हम चिप्स सप्लाई में उनकी बजाय दूसरे को प्राथमिकता कैसे दे सकते हैं।

50 साल में सेमीकंडक्टर चिप्स का महत्व बढ़ा

कंसल्टिंग फर्म बैन एंड कंपनी के सेमीकंडक्टर विशेषज्ञ पीटर हेनबरी कहते हैं, टीएसएमसी बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। इस आधुनिक टेक्नोलॉजी में कंपनी का लगभग एकाधिकार है। पिछले 50 साल में सेमीकंडक्टर चिप्स का महत्व बेहद बढ़ा है। 1969 में अंतरिक्ष यान अपोलो के लुनार मॉड्यूल ने 35 किलो वजनी हजारों ट्रांजिस्टर चंद्रमा पर भेजे थे।आज एपल की मेकबुक में 16 अरब ट्रांजिस्टर का वजन केवल डेढ़ किलो है। मोबाइल फोन, इंटरनेट से जुड़ी वस्तुओं , 5 जी, 6 जी टेलीकॉम नेटवर्क और कंप्यूटिंग की बढ़ती मांग से चिप्स के उपयोग में विस्तार होता रहेगा। 2020 में विश्व में 33 लाख करोड़ रुपए से अधिक चिप की बिक्री हुई थी। इसमें हर साल 5 प्रतिशत की बढ़ोतरी का अनुमान है।

ताइवान में सूखा पड़ने से चिप का उत्पादन प्रभावित

कंपनियों ने सेमीकंडक्टर चिप्स की कमी पर फरवरी में सबसे पहले गौर किया था। उस समय कई कारणों से चिप्स के ऑर्डर की डिलीवरी का समय 15 सप्ताह हो गया था। महामारी की वजह से आर्थिक गिरावट के बीच कार निर्माताओं ने चिप के ऑर्डर देना कम कर दिए थे। कई कंपनियों ने अमेरिका-चीन के बीच व्यापार और टेक्नोलॉजी युद्ध की आशंका में चिप्स की जमाखोरी शुरू कर दी। ताइवान में सूखा पड़ने से पानी की कमी के कारण भी चिप का उत्पादन प्रभावित हुआ है। चिप संकट गहराने पर इस टेक्नोलॉजी तक पहुंच की ओर लोगों का ध्यान गया है। चिप का आविष्कार अमेरिका ने किया है। वह इनकी डिजाइन भी सबसे बेहतर कर सकता है लेकिन बड़े पैमाने पर उनका उत्पादन नहीं करता है। बाइडेन ने सेमीकंडक्टर का उत्पादन बढ़ाने के लिए 3.76 लाख करोड़ रुपए की योजना बनाई है।

दुनिया की सबसे बड़ी चिप कंपनी 41 लाख करोड़ रुपए मूल्य की चीन में जन्मे इंजीनियर मॉरिस चांग ने 1987 में टीएसएमसी की स्थापना की थी। उन्होंने बाजार पर कब्जा करने के लिए पहले चिप्स के मूल्य कम रखे थे। चांग ने जून 2018 में 86 वर्ष की आयु में टीएसएमसी की कमान लियू और सीईओ सीसी वेई को सौंप दी थी। कंपनी का मूल्य इस समय 41 लाख करोड़ रुपए से अधिक है। टीएसएमसी के अलावा केवल दक्षिण कोरियाई कंपनी सैमसंग सबसे अधिक आधुनिक 5 नैनोमीटर की चिप्स बनाती है।

ई-कॉमर्स का जैकपॉट

4 दिन की फेस्टिव सेल में कंपनियों ने 20 हजार करोड़ रुपए की बिक्री की

ये पिछले साल की तुलना में 6% कम

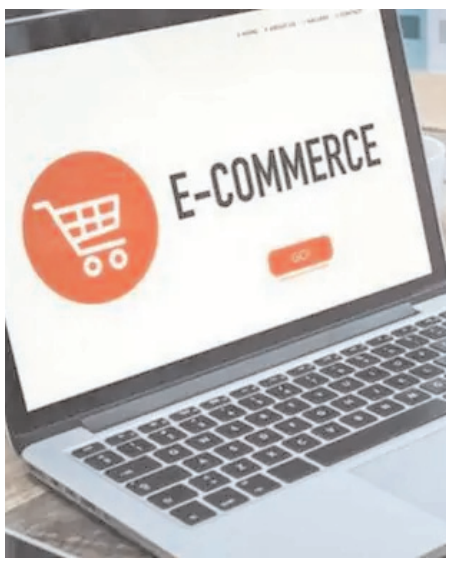

नई दिल्ली। अमेजन, फ्लिपकार्ट और दूसरे ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म ने शुरूआती 4 दिन की फेस्टिव सेल (2 से 5 अक्टूबर) के दौरान 2.7 बिलियन डॉलर (करीब 20 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा) के समान बेच चुकी है। रेडशीर कंसल्टिंग फर्म ने इस कमाई को फेस्टिवल सीजन के अंत तक 4.8 बिलियन डॉलर (करीब 36.07 हजार करोड़ रुपए) होने का अनुमान जताया है।

साल 2020 के मुकाबले बिक्री में 6% कमी

बात साल 2020 के 4 दिन के फेस्टिव वीक की करें तो ई- कॉमर्स की सेल्स में ओवरऑल 63त्न की ग्रोथ देखी गई थी। जबकि इस साल यह ग्रोथ 4 दिन में 57त्न की है। जो कि पिछले साल की तुलना में 6% कम है। स्मार्टफोन की बिक्री ने ई- कॉमर्स की कमाई में 4.8 बिलियन डॉलर का 50त्न का योगदान दिया है। रेडशीर के एसोशिएट पार्टनर उज्ज्वल चौधरी का कहना है कि पिछले साल फेस्टिव सेल्स (7 दिन के मुकाबले 9 दिन) में कस्टमर की डिमांड ज्यादा रही। इसी के हिसाब से देखा जाए तो ई-कॉमर्स की 2.7 बिलियन डॉलर का बिजनेस देखा गया है और अगले 5 दिन में यह 2.1 बिलियन डॉलर (करीब 1.58 लाख करोड़ रुपए) की बिक्री का अनुमान है।

फिर डाउन हुए फेसबुक-इंस्टाग्राम:

5 दिन में दूसरी बार फेसबुक और इंस्टाग्राम का सर्वर फेल

नई दिल्ली। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक और इंस्टाग्राम शुक्रवार की रात एक बार फिर डाउन हो गए। इस आउटेज पर कंपनी ने कहा कि कंप्यूटिंग प्लेटफॉर्म में आई तकनीकी खराबी के चलते ये दोनों प्लेटफॉर्म डाउन हो गए। इसी वजह से कई यूजर्स को परेशानी का सामना करना पड़ा। 5 दिन के अंदर फेसबुक आउटेज का ये दूसरा मौका है। इससे पहले 4 अक्टूबर की रात को फेसबुक के साथ इंस्टाग्राम और वॉट्सऐप 6 घंटे से भी ज्यादा देर के लिए डाउन हो गए थे। इस बार फेसबुक आउटेज का असर भारत में नहीं हुआ। जिन देशों में फेसबुक और इंस्टाग्राम डाउन हुए उनमें अमेरिका, ब्रिटेन, पोलैंड और जर्मनी के कुछ हिस्से शामिल रहे।

फेसबुक ने खेद जताया

सप्ताह भर के अंदर आए दूसरे आउटेज के लिए फेसबुक ने माफी मांगी है। फेसबुक ने रात 2:47 पर माफी मांगते हुए कहा कि कुछ लोगों को हमारे ऐप्स और वेबसाइट तक पहुंचने में समस्या हो रही है। अगर आप हमारी सर्विस इस्तेमाल नहीं कर पा रहे, तो हमें खेद है। हम जानते हैं कि आप एक दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए हम पर कितना निर्भर हैं। अब हमने समस्या को हल कर दिया है। इस बार भी अपना धैर्य बनाए रखने के लिए फिर से धन्यवाद।

महंगाई की आग : आज लगातार छठवें दिन महंगे हुए पेट्रोल-डीजल,

अक्टूबर में अब तक पेट्रोल 2.50 और डीजल 2.95 रुपए महंगा हुआ

नई दिल्ली। पेट्रोल-डीजल के दामों में लगी आग थमने का नाम नहीं ले रही है। सरकारी तेल कंपनियों ने आज यानी रविवार को लगातार छठवें दिन पेट्रोल-डीजल के दामों में बढ़ोतरी की है। आज दिल्ली में पेट्रोल की कीमत में 30 और डीजल की कीमत में 35 पैसे प्रति लीटर की बढ़ोतरी की है। पेट्रोल और डीजल की कीमतें बढ़ने के बाद दिल्ली में पेट्रोल के दाम 104.14 रुपए और डीजल के दाम 92.82 रुपए प्रति लीटर पर पहुंच गए हैं।

इस महीने 10 दिन में पेट्रोल-डीजल 9 बार महंगे हो चुके हैं। इससे पेट्रोल 2.50 और डीजल 2.95 रुपए तक महंगा हो चुका है। सिक्योरिटीज के वाइस प्रेसिडेंट (कमोडिटी एंड करेंसी) अनुज गुप्ता कहते हैं कि कच्चे तेल की मांग बढ़ने के कारण इसके दाम 80 डॉलर के पार निकल गए हैं और ये आने वाले दिनों में 90 डॉलर तक जा सकते हैं। इससे पेट्रोल-डीजल की कीमत में 2 रुपए तक की बढ़ोतरी हो सकती है।

82 डॉलर के पार निकला कच्चा तेल

शुक्रवार को अमेरिकी बाजार में ब्रेंट क्रूड 82.58 डॉलर प्रति बैरल पर बंद हुआ। ये 3 साल में कच्चे तेल का उच्चतम स्तर है। इससे पहले अक्टूबर 2018 में कच्चा तेल 82 डॉलर के पार गया था। ऑयल मार्केटिंग कंपनियां कीमतों की समीक्षा के बाद रोजाना

पेट्रोल और डीजल के रेट तय करती हैं।

इंडियन ऑयल , भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम सुबह 6 बजे पेट्रोल और डीजल की दरों बदलाव करती हैं। पेट्रोल-डीजल का का रेट आप स्क्रू के जरिए भी जान सकते हैं। इंडियन ऑयल के उपभोक्ता को स्पेस पेट्रोल पंप का कोड लिखकर 9224992249 नंबर पर और बीपीसीएल उपभोक्ता को RSP लिखकर 9223112222 नंबर पर भेजना होगा।

देश के प्रमुख शहरों में पेट्रोल-डीजल के दाम

शहर	पेट्रोल (रुपए/लीटर)	डीजल (रुपए/लीटर)
श्रीगंगानगर	116.18	106.86
अनूपपुर	115.51	104.52
परभणी	112.67	101.57
भोपाल	112.69	101.91
जयपुर	111.23	102.31
मुंबई	110.12	100.66
दिल्ली	104.14	92.82

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक,प्रकाशक एवं संपादक नागेश नरवरिया द्वारा जय माता प्रिंटर्स म.नं. 1 अमर दाल मिल के पास पेमदीपुरा चिकलोद रोड के पास बापू कालोनी जहांगीराबाद भोपाल मप्र से मुद्रित एवं म.नं. 51 एक्सटेंशन शिवलोक कॉलोनी फेस-3, खजूरी कलां रोड,तह. हुजूर जिला भोपाल से प्रकाशित। संपादक :- नागेश नरवरिया (समस्त विवादों का न्यायक्षेत्र भोपाल रहेगा।)